R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

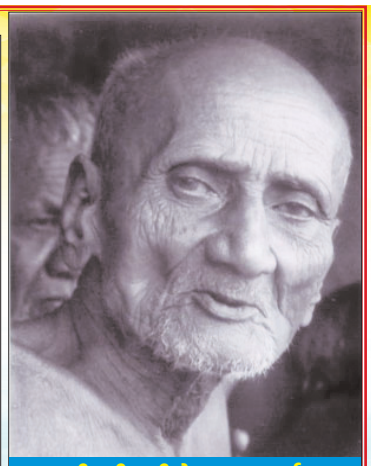

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

नवग्रह तीर्थ इंदौर चोरी का खुलासा
पृष्ठ 02 पर

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 32 अंक 30 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 18 मई 2026, वीर नि. संवत् 2552

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

3 सर्जरी हुई, सूर्यास्त के बाद खाना-पानी छोड़ हराया कैंसर

एम्स जोधपुर कर रहा इलाज पर स्टडी

एडवांस थर्ड स्टेज ओवरी कैंसरी, आंतों का संक्रमण और गिरता वजन डॉक्टरों ने जिंदगी के कुछ ही दिन शेष बताए थे, लेकिन राजस्थान के अजमेर जिले के किशनगढ़ की 51 वर्षीय अलका जैन कैंसर को हराकर पूरी तरह स्वस्थ हो गई हैं। इस चमत्कार पर अब एम्स जोधपुर के डॉक्टर स्टडी कर रहे हैं। वे बताती हैं कि उन्होंने इस दौरान सूर्यास्त के बाद खाना नहीं खाया। अन्न के साथ ही पानी भी छोड़ दिया। जितना संभव हो सकता था, उतना चलती थीं। परिवार ने प्रेशर कुकर में खाना बनाना बंद कर दिया। साथ ही गेहूं, मैदा, चीनी पूरी तरह बंद कर दी गई। हमने तुलसी, गिलोय, अश्वगंधा, शतावरी और पपीते के पत्तों जैसे हर्बल उपचारों को अपनाया। इलाज के दौरान चरक और सुश्रुत संहिता के सिद्धांतों सहित दुनिया में अभी तक इस रोग पर हुए शोधों में बताए नियम का पालन किया गया। साथ ही णमोकार मंत्र, तत्वार्थ सूत्र, रत्नकरंड श्रावकाचार और समयसार के पाठ से मानसिक बल की प्राप्त की।

डॉक्टरों ने कहा असंभव, मां ने कहा अभी मेरी उम्र बाकी है

फरवरी 2025 में जब अलका जैन को खाना निगलने में तकलीफ हुई, तो जांच में ओवरी कैंसर का पता चला। सीए 125 लेंवल 954 और फिर 1025 तक पहुंच गया। कैंसर के ऑपरेशन के बाद उनकी छोटी आंत लीक होने लगी, फिर ऑपरेशन हुआ। इसके बाद स्टोमा बन गया। फिर पित्त की थैली में पथरी बन गई। अब वे सभी रोगों को हराकर पूरी तरह स्वस्थ्य हैं। डॉक्टरों के इंकार पर वे बोलती हैं - अभी मेरी उम्र बाकी है।

अलका को मॉडर्न मेडिसिन दी गई। यानी ऐलोपैथ, आयुर्वेद के साथ योग, ध्यान के जरिए इलाज किया गया। अन्य विशेषज्ञों का भी इलाज चला। उन्होंने हिम्मत रखी और कैंसर की जंग जीत ली।

- डॉ. अंशुमान कुमार, ब्रेस्ट कैंसर सर्जन, नई दिल्ली

पंथवाद-संतवाद का राग भी आग है - उपाध्याय विशेष सागर जी

शेखर चंद पाटनी/राष्ट्रीय संवाददाता

अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ने अपने उपदेश में 2 प्रकार के धर्म का उपदेश किया था, 'ऋषी बनो या कृषि करो' अर्थात श्रमण बनो या श्रावक बनो, उत्तम मार्ग है मुनि बनना यदि मुनि नहीं बन सकते तो कम से कम मुनि भक्त बनो, उक्त उद्गार प. पू. विराग कीर्ति उपाध्याय श्री 108 विशेषसागर जी महाराज ने हरदा में धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहे। पू. उपाध्यायश्री ने आगे कहा कि धर्म एक है पर धर्म की परिभाषा भिन्न-भिन्न हो सकती है, इस पंचमकाल में सबसे बड़ा धर्म क्या है ? इसका उत्तर है पंथवाद-संतवाद से बाहर निकल कर पिंछी-कमंडल धारी संतों की सेवा करना। पं. दौलत राम जी ने ठीक ही कहा है 'यह राग आग दहे सदा तार्ते समामृत सेइये', पंथ का राग, संत का राग भी आग है। जब तक पंथवाद -संतवाद में लगे रहोगे तो वीतरागता की प्राप्ति नहीं हो सकती। अब समय आ गया है समझने की संभलने की। पू. उपाध्याय श्री ने आगे कहा कि आज प्रत्येक समाज, नगर व परिवार में ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो तोड़ने की नहीं जोड़ने की बात करें, कैंची का कार्य नहीं सुई का कार्य करें। समाज व परिवार को छूटने में समय नहीं लगता पर जोड़ने के लिए सारा जीवन भी कम पड़ जाता।

उपाध्याय संघ का मंगल विहार विरागोदय पथरिया की ओर चह रहा है।

॥श्री महावीराय नमः॥
WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
शुद्ध जैन भोजन किचन कारवैन के साथ
7 यूरोपियन देशो की सैर
18 May, 2 June, 16 June
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
GERMANY, SWITZERLAND
AUSTRIA, AMSTERDAM
ला: नेमचंद जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
VAYUDOOT
WORLD TRAVELS PVT. LTD.
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

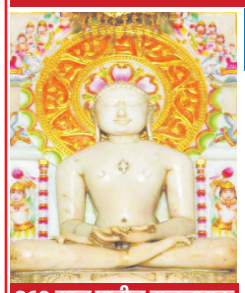

869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण

LIVE

आरती : 7:15 - 7:45 AM

शांतिधारा : 8:30 AM

@jainmandirhasteda

नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885

नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.

संपर्क सूत्रः
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री)
9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष)
095880-20330

नवग्रह तीर्थ जैन मंदिर में हुई सनसनीखेज चोरी का पर्दाफाश

पुनीत जैन

मध्य प्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर के एरोड्रम थाना क्षेत्र में 4 मई को नवग्रह तीर्थ जैन मंदिर में हुई सनसनीखेज चोरी का पुलिस ने पर्दाफाश कर दिया है। पुलिस ने इस मामले में 4 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है जिन पर 10-10 हजार रुपये का इनाम घोषित था। आरोपियों के पास से पुलिस ने करीब 4 लाख रुपये का चोरी का माल बरामद किया है, जिसमें चांदी की मूर्तियां, कलश और अष्ट धातु की मूर्तियां शामिल हैं। घटना में शामिल 6 आरोपी अभी भी फरार बताए जा रहे हैं, इस मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने एसीपी मल्हारगंज और थाना प्रभारी के नेतृत्व में एक विशेष जांच टीम का गठन किया था। पुलिस ने आरोपियों की गिरफ्तारी पर 10 हजार रुपये के इनाम की भी घोषणा की थी। इस घटना को सुलझाने के लिए पुलिस टीम ने दिन रात एक कर दिया, इलाके के लगभग 200 से अधिक सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली गई, जांच में पता चला कि 5 या 6 आरोपी मोटर साइकिल से आए थे, उनके हाथों में लोहे की छड़ें थीं और वे वारदात को अंजाम देने के बाद फरार हो गये। लगातार तकनीकी जांच और मुखबिरों से मिली सटीक सूचना के आधार पर पुलिस ने मध्य प्रदेश के अलावा गुजरात और महाराष्ट्र में भी दबिश दी, इसी बीच पुलिस को अहम सुराग मिला और मुख्य आरोपी ललित उर्फ आलेख पिता हुकुम चौहान को सुपर कॉरिडोर क्षेत्र से घेराबंदी कर पकड़ लिया गया, पुलिस को देखकर भागने के प्रयास में वह घायल भी हो गया, सख्ती से पूछताछ करने पर उसने अपने साथियों के नाम उगल दिए, ललित की निशानदेही पर पुलिस ने ओमप्रकाश पिता नरसिंह चौहान, विशाल पिता कालूराम और गीता बाई पति तुलसीराम मकवाना को गिरफ्तार कर लिया। बरामद किए गए माल की कुल कीमत लगभग चार लाख रुपये आंकी गई है, पुलिस अब इस घटना में शामिल शेष 6 फरार आरोपियों की सरगर्मी से तलाश कर रही है।

बीसवीं सदी के मुनिकुंजर ज्येष्ठाचार्य आदिसागर जी (अंकलीकर) के चतुर्थ पट्टाधीश प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती, महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चरित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन, वंदन

सन्मतिसुनीलम् पार्ट – 01

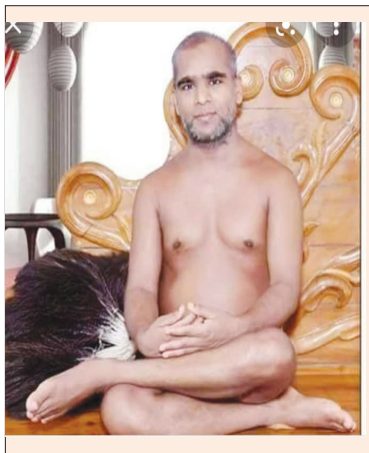

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थो की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन
ऐसे आचार्य श्री सुनील सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

अच्छा वक्त दुनिया को बताता है कि आप कैसे हैं,
और बुरा वक्ता आपको बताता है कि दुनिया कैसी है

-: नमनकर्ता :-

सुरेश कुमार संघवी बासवाडा
श्रीमती अलका बड़जात्या बडौदरा
पारस-बिपुल शाह ईडर

सुमन दीप परिवार बडोदरा
मन्जू पाटनी बडोदरा
श्री भैरूनाथ पेन्टस एकलिंगपुरा उदयपुर

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

SANTOSH JAIN & ASSOCIATES

SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD

ANAMICA TRADERS PVT. LTD.

L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

शास्वत तीर्थ अयोध्या में चिंतन बैठक हुई सम्पन्न

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने लिए कई निर्णयः 125वें स्थापना वर्ष कार्यक्रम की रुपरेखा पर हुई चर्चा

रत्नेश जैन रागी, बकस्वाहा

अयोध्या। शास्वत तीर्थ अयोध्या में भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) जन्म भूमि दिगम्बर जैन मन्दिर, बडी मूर्ति, रायगंज में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय चिंतन बैठक परम पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सान्निध्य में आयोजित की गई, जिसमें कमेटी के 125वें स्थापना वर्ष (शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष) को प्रभावशाली प्रभावना पूर्वक मनाने पर विस्तृत मंथन हुआ। बैठक का शुभारम्भ तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तरांचल के मंत्री प्रतिष्ठाचार्य विजय कुमार जैन द्वारा मंगलाचरण एवं दीप प्रज्वलन कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन, महामंत्री संतोष पेंढ़ारी, कोषाध्यक्ष अशोक दोशी, मध्यांचल अध्यक्ष डी. के. जैन, मध्यांचल कार्यकारी अध्यक्ष व बुन्देलखण्ड प्रभारी सन्तोष कुमार जैन घड़ी, डा. अनुपम जैन एवं देश के विभिन्न अंचल से पधारे अध्यक्ष तथा अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों द्वारा किया गया। तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के प्रचार प्रमुख प्रवक्ता राजेश जैन रागी बकस्वाहा ने विज्ञप्ति में बताया कि कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय

अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन ने 125 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 'शतकोत्तर रजत स्थापना महोत्सव' (22 अक्टूबर 2026 से 22 अक्टूबर 2027) को विश्व स्तर पर भव्यता पूर्वक मनाने हेतु कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक आयोजन की योजनाओं की रुपरेखा से अवगत कराया। वहीं शतकोत्तर रजत स्थापना महोत्सव समिति के चेयरमैन जवाहरलाल जैन एवं मथुरा महोत्सव के चेयरमैन श्री प्रदीप जैन पीएनसी ने कार्यक्रम को भव्य बनाने के लिए कई सुझाव दिए एवं समायोजन की पूरी संरचना प्रस्तुत की। तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष पेंढारी तथा राष्ट्रीय मंत्री हंसमुख गांधी ने प्रांतीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रमों के समन्वय की विस्तृत कार्ययोजना प्रस्तुत की। मध्य प्रदेश अंचल के अध्यक्ष डी. के. जैन ने अपने विचार रखते हुए प्रदेश स्तर पर कार्यक्रमों के आयोजन की रणनीति साझा की। बैठक के दौरान डॉ. जीवन प्रकाश जैन ने ''तीर्थ चक्रवर्ती'' योजना की जानकारी देते हुए बताया कि इस योजना के अंतर्गत एक लाख रुपये राशि निर्धारित की गई है, जिससे अधिक से अधिक लोगों को तीर्थक्षेत्र कमेटी से जोड़ा जा सके। कार्यक्रम में गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस महोत्सव की सफलता के लिए मंगल आशीर्वाद देते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि प्रत्येक समिति में अंतरंग परिषद, बाह्य परिषद एवं सामाजिक परिषद का गठन होना चाहिए, जिससे समाज और तीर्थों के विकास को गति मिल सके। माताजी ने कहा कि यह महोत्सव प्रभावशाली कार्यक्रम होना चाहिए, जिससे तीर्थों के प्रति लोगों की सम्बद्धता बढ़े और जन जन को जोड़ा जा सके एवं तीर्थों की सशक्त भूमिका बताई जा सके। उन्होंने प्राचीन तीर्थों के संरक्षण एवं संवर्धन पर विशेष जोर दिया। शास्वत श्री अयोध्या जैन तीर्थक्षेत्र के पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी ने कहा कि 125वें स्थापना वर्ष का आयोजन ऐसा होना चाहिए, जिसे आने वाली पीढ़ियां भी याद रखें। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्घाटन 22 और 23 अक्टूबर 2026 को मथुरा चौरासी में किया जाएगा, जिसके बाद पूरे देश में विभिन्न आयोजन होंगे।

कमेटी के राष्ट्रीय पदाधिकारी एवं अंचल अध्यक्षों व देश भर से पधारे महानुभावों की उपस्थिति में मथुरा से महोत्सव के शुभारंभ की योजना को अंतिम रूप दिया गया। इस बैठक में मुख्य रुप से मथुरा में भव्य उद्घाटन समारोह की तैयारी। 'तीर्थ-चक्रवर्ती' योजना के माध्यम से तीर्थ सुरक्षा का संकल्प। महिला एवं युवा शक्ति को जोड़ने का महाअभियान, कानूनी मुकदमों और तीर्थ संरक्षण पर विस्तृत चर्चा कर निर्णय लिए गए।

आवश्यक सूचना

पिछले कुछ दिनों से भोपाल (मध्य प्रदेश) निवासी ''आरिफ'' नाम का एक व्यक्ति नीचे दिये गये मोबाइल नम्बरों से जैन समाज के महासभा के पदाधिकारियों का परिचय एवं संदर्भ देकर आर्थिक मदद एवं दान की मांग धोखाधड़ी एवं झूठ बोलकर कर रहा है साथ ही अपना परिचय महेन्द्र कुमार जैन नाम दे रहा है। उक्त व्यक्ति से पदाधिकारियों का कोई लेना-देना नहीं है। अतः समाज के सभी सम्मानित व्यक्तियों से अनुरोध है कि इस व्यक्ति से सतर्क एवं सावधान रहें तथा कोई भी लेनदेन न करें। उपरोक्त ''आरिफ'' नामक व्यक्ति के द्वारा प्रयुक्त कुछ मोबाईल नम्बर - 917694060314, 917999689142, 919713202682, 916265590007, 919516147446, 919724306649, 917509605896, 918224844324, 919111474461, 918518869177

- पवन गोधा, महामंत्री
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

परम पूज्य, वात्सल्य वारिधि, पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के चरणों में शत् शत् नमन

आचार्य वर्धमान सागर वचन – भाग 1

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन
ऐसे आचार्य श्री वर्धमान सागरजी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

मुक्ति तो मेरा स्वभाव है, मैं सदा मुक्त ही हूं

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रीपाल सबलावत, सुरेश सबलावत, हुलासचंद सबलावत परिवार रेडिप्रिण्ट जयपुर

सुधान्शु कासलीवाल अध्यक्ष श्री महावीर जी
विवेक काला, (कालाजी ज्वैलर्स) जयपुर
श्रीपाल भागचन्द चूड़ीवाल, श्यामनगर जयपुर
राजेन्द्र कटारिया, अहमदाबाद

धर्मचंद पहाड़िया जयपुर राज. केन्द्रीय कार्याध्यक्ष तीर्थ संरक्षिणी
इन्द्रमणी देवी चूड़ीवाल, निखार, जयपुर
कैलाशचंद पाटनी किशनगढ़ (उसेवा वाले)
Caption Tours And Travels Co. Kuwait (Mr. Rishabh Pachori, Mr.Mayur Pachori, Parsola)

विज्ञापन प्रेषकः R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी,
जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

आचार्य श्री सुनील सागरजी के सानिध्य में वड़ोदरा में पहली बार आयोजित हुआ "विरासत लाइव शो", जैन संस्कृति और इतिहास से जुड़ी नई पीढ़ी

शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

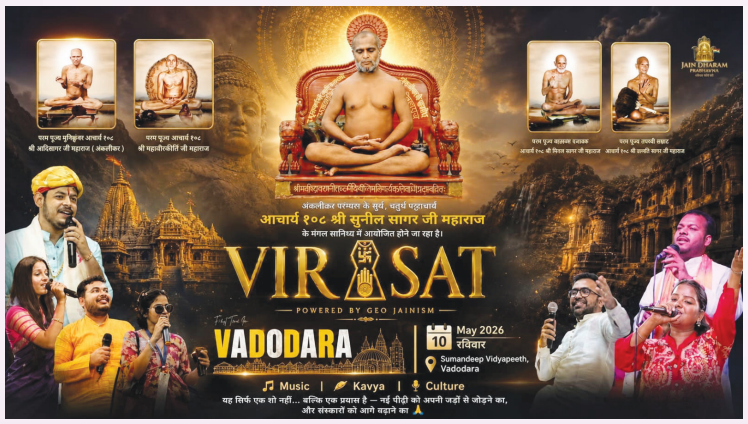

बड़ोदरा। दिनांक 10 मई को बड़ोदरा की धरती पर पहली बार भव्य ''विरासत लाइव शो'' का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम केवल एक मंचीय प्रस्तुति नहीं, बल्कि नई पीढ़ी को अपनी जड़ों, संस्कारों और जैन संस्कृति से जोड़ने का एक विशेष प्रयास रहा। कार्यक्रम में जैन धर्म के गौरवशाली इतिहास, साहित्य एवं परंपराओं का प्रभावी प्रस्तुतिकरण किया गया।

कार्यक्रम में आदिनाथ भगवान एवं नेमीनाथ भगवान के इतिहास के साथ-साथ प्राचीन अंकलीकर परंपरा के पूर्वाचार्यों के जीवन, उनकी कठोर तपस्या तथा रिद्धि-सिद्धियों का विस्तृत वर्णन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सुमनदीप विद्यापीठ की बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण से हुई। इसके पश्चात दीप प्रज्वलन एवं चित्र अनावरण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर प्राकृत ज्ञान केसरी चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य भगवन श्री सुनील सागर जी गुरुदेव का पाद प्रक्षालन मनसुख भाई शाह एवं अन्य पदाधिकारियों द्वारा किया गया। साथ ही ''श्री सुनील सागर युवा संघ भारत'' की वड़ोदरा शाखा की स्थापना भी की गई, जिसमें युवाओं ने धर्म प्रचार एवं सेवा के लिए निस्वार्थ भाव से कार्य करने की शपथ ली।

कार्यक्रम में ''सुनील सागर मीडिया टीम'' का भी स्वागत-सम्मान किया गया, जो सोशल मीडिया के माध्यम से निरंतर धर्म प्रचार-प्रसार का कार्य कर रही है। इसी दौरान युवा संघ द्वारा मनसुख भाई शाह को ''श्रावक रत्न'' की उपाधि से अलंकृत किया गया। साथ ही तमिल जैन पत्रिका का विमोचन भी किया गया। कवि सजल जैन, जूही जैन एवं अभिनव जैन सहित उनकी पूरी टीम का स्वागत एवं सम्मान किया गया। ''विरासत लाइव शो'' का शानदार प्रस्तुतीकरण जियो जैनिसम द्वारा किया गया। अपने मंगलमय उद्बोधन में आचार्य श्री ने कहा कि हमारी संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है तथा नई पीढ़ी को अपने इतिहास को समझना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में भक्तिमय वातावरण में भव्य आरती हुई, जिसमें गुरुभक्तों ने नृत्य के साथ आरती कर कार्यक्रम को और अधिक भावपूर्ण बना दिया। हजारों श्रद्धालुओं ने इस आयोजन में उपस्थित होकर जैन विरासत को सुना, समझा और आत्मसात किया।

जब इंसान अपने अहंकार और इच्छाओं का शिकार होता है, तो वह स्वयं की मालिकियत से दूर होकर नशे का बंदी बन जाता है, फिर वह न ठीक से जी पाता है, न मर पाता है

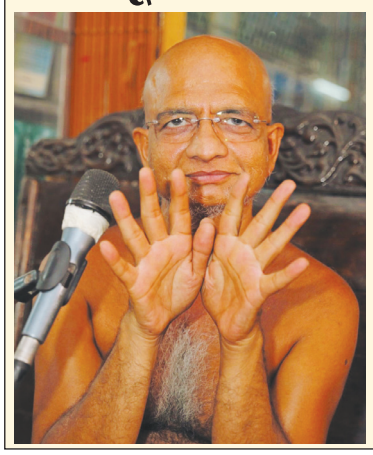

- अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी

औरंगाबाद। अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ परतापुर बांसवाड़ा राजस्थान में विराजमान हैं, उनके सानिध्य में वहां विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम संपन्न हो रहे हैं। उसी श्रृंखला में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि मानव जीवन में अहंकार और इच्छा ऐसे मादक तत्व हैं जो व्यक्ति को किसी भी प्रकार के नशे की लत की ओर धकेल सकते हैं। दुनिया में नशा करने वाले कितने लोग हैं, यह जानना मानो रेत से तेल निकालने जैसा कठिन है। नशा भी दो प्रकार का होता है - एक अच्छा नशा और एक बुरा नशा। फिर प्रश्न उठता है - सही और गलत क्या है-? जो नशा पाप से बचाए, पुण्य की राह दिखाए, स्वयं से मिलाए और परमात्मा बनाए - वह नशा श्रेष्ठ और कल्याणकारी है। ऐसा नशा हर व्यक्ति को होना चाहिए।

जो नशा पाप की राह पर ले जाए, स्वयं से दूर करे और इंसान को इंसानियत से गिराकर शैतान बना दे - वह नशा केवल बुरा ही नहीं, बल्कि जीवन के लिए अत्यंत घातक है। आज 20: लोग एक अदृश्य नशे में डूबे हुए हैं - एंटी-डिप्रेसेंट और नींद की दवाओं का नशा। जब जीवन में दबाव बढ़ता है, वह तनाव में बदलता है। तनाव से उदासी जन्म लेती है, उदासी से अकेलापन, और अंततः डिप्रेशन, फिर इस डिप्रेशन के दो बड़े दुष्परिणाम सामने आते हैं - भय और नशा। बीमारी से बचने के लिए ली गई दवा ही धीरे-धीरे बीमारी का कारण बन जाती है। आज पूरी दुनिया कहीं न कहीं इसी संघर्ष से गुजर रही है।

मेरा आध्यात्मिक चिंतन कहता है - यदि आप डिप्रेशन की दवा ले रहे हैं या नींद की गोलियों पर निर्भर हैं, तो सावधान हो जाइए और 24 घंटे में केवल 10 मिनट आत्मचिंतन अवश्य कीजिए। अपने आप से पूछिए - मैं यह सब किसके लिए कर रहा हूँ-? जो मैं कर रहा हूँ, क्या वह वास्तव में मेरा स्वभाव है-?

जीवन का सारा खेल केवल एक श्वास का है। क्यों न हम प्रतिदिन 10 मिनट अपनी आती-जाती श्वास को देखें और समझें - श्वास का आना जीवन है और श्वास का रुक जाना मृत्यु। यह चिंतन ही हमें शुभ परिणामों की ओर ले जाएगा, और फिर जो होगा, वह शुभ ही होगा।

- नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल

जयपुर शहर परिक्षेत्र के प्रताप नगर में युवा परिषद परिवार का स्वर्ण जयंती दीक्षा पथ कार्यक्रम हुआ हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

10 मई, जयपुर। अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद प्रतापनगर सम्भाग के तत्वावधान में प्रतापनगर के सेक्टर-10 स्थित मोहनलाल चंद्रावती चैरिटेबल ट्रस्ट भवन में युवा परिषद का 50वां स्वर्णिम जयंती महोत्सव मनाया गया। इस मौके पर परम प्रभावक राष्ट्र गौरव, आर्यिका शिरोमणी 105 ज्ञानमती माताजी के दीक्षा पथ के जीवनकाल को भव्यतम नाटिका मंचन के साथ बड़े ही स्वर्णिम तरीके से प्रस्तुत किया गया।

अध्यक्ष अनिल पाटनी ने बताया कि अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने की खुशियों को एक यादगार उत्सव के रूप में ऋषभदेव नगरी से बड़े ही स्वर्णिम भावों में सँजोया गया, कार्यक्रम का आरम्भ दीप प्रज्वलन भामाशाह समाजरत्न सुनील-मुनिया सौगानी परिवार (वर्धमान सरोवर) ने किया। इस मौके पर राजस्थान जैन सभा जयपुर के उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए।

अध्यक्ष अनिल पाटनी ने बताया कि युवा परिषद के 50वें स्वर्णिम जयंती महोत्सव की खुशियों एवं गुरुमां ज्ञानमती माताजी के वैराग्य पथ दीक्षा पथ को जन्म अवस्था से दीक्षा पथ वैराग्य पथ को बड़े सजीव नाटिका चित्रण के माध्यम से मुख्य मंच पर बड़ा ही भव्यतम मंचन साकार किया।

परम पूज्य, वात्सल्य वारिधि, पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के चरणों में शत् शत् नमन

आचार्य वर्धमान सागर वचन - भाग 02

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन
ऐसे आचार्य श्री वर्धमान सागरजी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

भरपूर प्रयास करें रिश्तों में झूठ, चालाकियां व संदेह प्रवेश न करें..
अन्यथा एक दिन अकेला रहने की परिस्थिति बन जाएगी

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रीपाल सबलावत, सुरेश सबलावत, हुलासचंद सबलावत परिवार रेडिप्रिण्ट जयपुर

सुधान्शु कासलीवाल अध्यक्ष श्री महावीर जी
सौभाग्यमल कटारिया अहमदाबाद
पद्मचंद महेन्द्र कुमार धाकड़ा चेन्नई
एम. के. जैन सरिता जैन चेन्नई

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

SANTOSH JAIN & ASSOCIATES

SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD

ANAMICA TRADERS PVT. LTD.

L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

मुनिश्री सुधा सागरजी ससंघ के सान्निध्य में हुआ मौजी बंधन समारोह

मुंगावली। पहली बार चातुर्मास को छोड़ कर मुंगावली में परम पूज्य आध्यात्मिक संत निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में मौजी बंधन समारोह का भव्य आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों बच्चों को परम पूज्य श्री सुधासागरजी महाराज के साथ संघ में विराजमान अठारह संतों ने विभिन्न मंत्रों को सभी के सिर पर एक साथ स्थापित कर संस्कारों का शंखनाद किया। इसके पहले समारोह का भव्य शुभारंभ दोपहर में आचार्य श्री की संगीत के साथ पूजन से हुई, इसके बाद पूर्व दिशा के साथ उत्तर पश्चिम दक्षिण दिशाओं विराजमान जितने भी केवली भगवान पंच परमेष्ठि भगवान सहित सिद्धक्षेत्र अतिशय क्षेत्र को साक्षी मान कर वंदना करते हुए सभी की अमृत स्नान करते शुद्धि की क्रिया की गई, इसके बाद नवतिलक की क्रिया की गई वहीं सभी मौजी बंधन करने वाले को रक्षा मंत्रों से वेष्टित करते हुए आठों दिशाओं का वंदन किया गया तद्उपरांत मुख्य पात्रों राहुल अरविंद कुमार बजाज, दर्शन जैन, सुरेश कुमार ललितपुर, अलका जैन जबलपुर परिवार, प्रभादेवी गदियाना परिवार, कोषाध्यक्ष परिवार, राहुल जैन मुंगावली को मुख्य यजमान के रूप में सर्वप्रथम मुनिपुंगव श्री सुधा सागरजी महाराज के कर कमलों से सबसे पहले संस्कार कराने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस क्रियाओं को किया गया मौजी बंधन

के दौरानः इस दौरान पंच नमस्कार मंत्र के साथ ही चतारी दंडक के साथ ही सम्यकदर्शन के आठों अंग को स्थित किया। सम्यग्दर्शन सम्यकज्ञान सम्यकचारित्र के संस्कार स्थापित किये। सत्व तत्व सम्राज्य पद ग्रहण कराया। वात्सल्य एवं प्रभावना परम निर्माण पद ग्रहण कर अष्ट मद रहित अष्टमूल गुणों सहित शब्द गामी मंत्रों से संस्कारित किया गया साथ ही परम निर्माण पद ग्रहण ग्रहण स्वाहा अपने हाथों से केशर से एक एक बीज मंत्र की मस्तक पर स्थापित किया व मयूर पिच्छिका से आशीर्वाद दिया। जब संघ भइया जी को भी किया गया मौजी बंधन संस्कार से संस्कारितः मध्य प्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने बताया कि पहली बार संघ में विराजमान घर छोड़कर आये हुए सभी बाल ब्रह्मचारी भाईयों को भी मौजी बंधन समारोह में मुख्य यजमानों के बाद एक-एक कर मंच पर मुनिपुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज ने अपने कर कमलों से भक्तों की तालियों एवं जय जयकार के बीच संस्कारित किया, इस दौरान सभी के मस्तक पर केशर से लेखन करते हुए मंत्रोच्चार किया गया। भेंट में और पुरस्कार में मिली चीज को बेचना नहीं है उसका सदुपयोग करना वह सीख पूज्य पुरुष देते हैंः इसके पहले सुबह धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए मुनिपुंगव श्री सुधा सागरजी महाराज ने कहा कि कहीं से भी भेंट मिले उसे स्वीकार करने में संकोच नहीं करना चाहिए। भेंट एक सम्मान है, जब आप लोग ससुराल जाते हैं तो आपकी सासु मां कुछ देती है उसे आप लोग लेते हैं या वह हेकड़ी दिखाकर सौ रुपए के नोट को वापिस कर देते हैं, ये राशि सम्मान निधि कहलाती है। आप इसको वसियत बनाकर रख सकते हैं, रखना ही चाहिए। भेंट में और पुरस्कार में मिली चीज को बेचना नहीं है। उसका सदुपयोग करना वह सीख पूज्य पुरुष देते हैं, उसे खर्च मत करना, उसे सुरक्षित कर लेना।

मुसीबत और खुशी बिना अपॉइंटमेंट के आती हैं

- आचार्य सुनील सागरजी

अहमदाबाद। तैयार रहो हर परिस्थिति के लिए, मुसीबत हो या खुशी, दोनों बिना बुलाए मेहमान हैं, जरूरत है केवल एक संतुलन की। मुसीबत में होश बनाए रखना और खुशी में जोश बनाए रखना। आचार्य देव कुंदकुंद स्वामी के उपदेशों में बताया गया कि संसार 'संजोग मूलम दुःखस्य' - अर्थात् जितने अधिक संयोग, उतने अधिक दुख के कारण। संपत्ति, संबंध, प्रतिष्ठा-सब जीवन में जरूरी हैं, पर जब यही मोह बन जाते हैं, तब वही बंधन बन जाते हैं। मोक्ष मार्ग पर चलने वाले के लिए अंतर्मुखता आवश्यक है। बाहरी चकाचौंध, रिद्धि-सिद्धि या अहंकार नहीं, बल्कि शुद्ध भाव ही आत्मोन्नति का मार्ग है। उदाहरण स्वरूप बताया गया कि एक व्यक्ति ने अहंकार में कहा कि 'तुम्हारे पूरे घर से बड़ा मेरा बाथरूम है।' परन्तु धर्म की तुला पर जो व्यक्ति रोज पूजा-भक्ति करता है, उसका पुण्य उस सोने-चांदी से कहीं अधिक मूल्यवान है।

धर्म में तोल संपत्ति का नहीं, परिणामों का होता है। 'परिणाम संभालो-भाव संभल गए तो फल भी संभल जाएगा।' 'धर्म में द्रव्य नहीं, भावना की शुद्धि मायने रखती है।' 'जिनवर भगवान को भाव से पूजो, क्योंकि भाव ही भक्ति का प्राण है।'

अंतर्मुखी होने से मिलता है आत्मसुखी जीवन - अंकलीकर वाणी, आचार्य सुनील सागर जी-20 नवम्बर 2025

- शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय राजकीय अतिथि, आचार्य श्री 108 शशांक सागर जी मुनिराज के चरणों में शत् शत् नमन्

आचार्य श्री शशांक सागर जी महाराज श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सेक्टर-3 मालवीय नगर, जिला जयपुर में विराजमान हैं।

आचार्य शशांक सागर वचन

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन,
ऐसे आचार्यश्री शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

आचार्य 108 श्री सुन्दर सागर जी महाराज ससंघ के साथ हैं।

आनंद नहीं बढ़ रहा तो मोक्षमार्ग भी नहीं बढ़ रहा

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपुर)
श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर जयपुर)
श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
अनिल कुमार पाण्ड्या (बनेठा वाले)
गजेन्द्र बड़जात्या, (कामा वाले) जयपुर

श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोल्या (मारूजी का चौक, जयपुर)
पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
अशोक चांदवाड (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
मधु जैन अध्यक्षा-श्री दिग. जैन मंदिर प्रतापनगर सेक्टर-3
कमल चंद छाबड़ा अध्यक्ष 1008 श्री शांतिनाथ दिग. जैन मंदिर मान्यवास, मानसरोवर जयपुर

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

सम्पादकीय

मोबाइल युग में संस्कारों का महाकुंभ

इन्दौर में 2000 बच्चों ने सीखा जैनत्वः डिजिटल तकनीक और श्रद्धा का अद्भुत संगम बना यंग जैन स्टडी ग्रुप का शिविर

इन्दौर। सुबह के ठीक 6:50 बजे 3 छोटे-छोटे बच्चे हाथों में पूजन की थालियाँ लिए अनुशासित पंक्तियों में बैठे हैं। णमोकार मंत्र की मधुर गूंज है, अभिषेक का अद्भुत दृश्य है, अष्ट द्रव्य पूजन की श्रद्धा है। पूरा वातावरण ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी विशाल पंचकल्याणक महोत्सव का दिव्य दृश्य साकार हो उठा हो। यह कोई साधारण आयोजन नहीं था, बल्कि आधुनिक युग में संस्कारों की ऐसी अलख थी जिसने हर देखने वाले को भावविभोर कर दिया।

यंग जैन स्टडी ग्रुप द्वारा 3 से 10 मई 2026 तक सन्मति स्कूल, संयोगितागंज, इन्दौर में आयोजित जैन बाल एवं युवा संस्कार शिक्षण शिविर ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि दिशा सही हो तो आज की पीढ़ी धर्म और संस्कारों से दूर नहीं, बल्कि उन्हें सीखने के लिए उत्सुक है।

अमेरिका की विशेष नौकरी छोड़ समाज संस्कारों में जुटे पं. प्रकाश छाबड़ाः माइक्रोसॉफ्ट अमेरिका का आकर्षक पैकेज और आधुनिक कॉर्पोरेट जीवन छोड़कर समाज और संस्कारों के लिए समर्पित छाबड़ा परिवार और पं. प्रकाश छाबड़ा का यह प्रयास आज एक विशाल संस्कार अभियान का रूप ले चुका है। उनके मार्गदर्शन में आयोजित इस शिविर में 2200 से अधिक बच्चों और युवाओं ने स्वयं प्रेरित होकर ऑनलाइन पंजीयन कराया। इनमें से लगभग 2000 बच्चों युवाओं ने आठ दिनों तक अनुशासित वातावरण में जैनत्व के मूल संस्कार ग्रहण किए। सबसे विशेष बात यह रही कि यह सहभागिता किसी दबाव से नहीं, बल्कि बच्चों और युवाओं की अपनी आंतरिक जिज्ञासा और श्रद्धा से उत्पन्न हुई थी।

जब 2000 बच्चों ने एक साथ किया अष्टद्रव्य पूजनः प्रतिदिन प्रातः 5 बजे से ही शिविर की व्यवस्थाएँ प्रारंभ हो जाती थीं। सन्मति स्कूल की लगभग 40 से अधिक बसें सुबह 5:30 बजे विभिन्न क्षेत्रों से बच्चों को लेकर शिविर स्थल पहुंचती थीं। ठीक 6:50 बजे जिनेन्द्र अभिषेक और उसके पश्चात अष्ट द्रव्य पूजन प्रारंभ होता था। श्री विमलचंदजी छाबड़ा के मार्गदर्शन और मधुर स्वर की धनी श्रीमती जयश्री टोंग्या की वाणी में जब 2000 बच्चे एक साथ पूजन करते थे, तब दृश्य इतना भव्य होता कि हर व्यक्ति कुछ क्षणों के लिए मंत्रमुग्ध रह जाता। ऐसा प्रतीत होता मानो नई पीढ़ी को केवल धर्म बताया नहीं जा रहा, बल्कि संस्कारों को उनके जीवन का उत्सव बनाया जा रहा हो।

जैन दर्शन के गूढ़ रहस्य बच्चों ने सहजता से सीखेः शिविर में बच्चों और युवाओं को लेवल वन से लेवल सेवन तक विभाजित कर जैनागम आधारित विषयों का आधुनिक शैली में अध्यापन कराया गया। णमोकार मंत्र, पंच परमेष्ठी, भगवान तीर्थंकरों का स्वरूप, छह द्रव्य, सात तत्व, आठ कर्म, दशधर्म, चार गति, जीव-अजीव, भक्ष्य-अभक्ष्य, तीन लोक, रात्रि भोजन त्याग, छने पानी का महत्व, सेव्य-अनुसेव्य जैसे गंभीर विषयों को युवा विद्वानों और विषय विशेषज्ञों ने सरल भाषा और डिजिटल प्रस्तुति के माध्यम से समझाया। लगभग 2000 बच्चों व युवाओं ने प्रत्यक्ष अध्ययन किया, जबकि सैकड़ों बच्चे यू-ट्यूब लाइव के माध्यम से जुड़े।

डिजिटल क्लासरूम में धर्म अध्ययन का नया प्रयोगः पूजन और स्वल्पाहार के पश्चात साइरन बजते ही बच्चे उत्साह पूर्वक अपने-अपने कक्षों में पहुंच जाते थे। सभी कक्ष डिजिटल तकनीक, प्रोजेक्टर और पीपीटी प्रेजेंटेशन से सुसज्जित थे। शिक्षक पहले से तैयार रहते और बच्चे पूरे मनोयोग से नोट्स बनाते, प्रश्न पूछते और समाधान प्राप्त करते दिखाई देते। कई कक्षाओं में ऐसा वातावरण था मानो कोई आधुनिक प्रोफेशनल ट्रेनिंग प्रोग्राम चल रहा हो, लेकिन विषय था - ''जैनत्व और जीवन संस्कार''।

तकनीक बनी संस्कारों की सहयोगीः शिविर की सबसे अनूठी विशेषता इसका डिजिटलीकरण रहा। प्रत्येक शिविरार्थी का ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन, लेवल आधारित डेटा, उपस्थिति और परीक्षा रिकॉर्ड डिजिटल रूप से सुरक्षित रखा गया। बसों के आगमन और प्रस्थान की जानकारी सीधे अभिभावकों के मोबाइल पर भेजी जाती थी, जिससे हजारों बच्चों का संचालन अत्यंत व्यवस्थित ढंग से संभव हो पाया। शिविर की समस्त अध्ययन सामग्री और व्याख्यान ऑनलाइन उपलब्ध कराए गए, ताकि बच्चे कभी भी और कहीं भी उन्हें पुनः देख सकें। यह आधुनिक तकनीक और संस्कारों का ऐसा समन्वय था जिसने सभी को प्रभावित किया।

यह इन्दौर के लिए वरदान हैः शिविर का अवलोकन करने पहुंचे अनेक सामाजिक, धार्मिक और औद्योगिक क्षेत्र के प्रमुख लोगों ने इसे ''अद्भुत'', ''अनुकरणीय'' और ''इन्दौर के लिए वरदान'' बताया।

सांसद शंकर लालवानी, अशोक जैन (अरिहंत कैपिटल), अमित कासलीवाल, आनंद गोधा, भरत मोदी, अशोक किरण जैन, सुनील मीना जैन, श्रीमती श्वेता संजय बंडी, नेहा पलाश बक्षी, अविनाश सेठी, विजित रामावत, श्रीमती निर्मला पहाड़िया, श्रीमती बिंदु निखिलेश पांड्या, श्रीमती सरोज सुरेश बड़जात्या, नवीन-शिवानी गोधा, सुनील शाह, दिलीप दोषी, ज्ञानेश सिंघई, डॉ. हर्षल-दीप्ति शाह, श्रीमती श्वेता अरुणा बंडी, श्रीमती नेत्रा अपूर्व पालविया एवं श्रीमती अनीता वेद सहित अनेक गणमान्य नागरिकों ने शिविर पहुंचकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया और व्यवस्थाओं की सराहना की।आगंतुकों का कहना था कि मोबाइल और सोशल मीडिया के इस दौर में यदि हजारों बच्चे स्वेच्छा से धर्म, अनुशासन और संस्कार सीखने के लिए प्रतिदिन प्रातः उपस्थित हो रहे हैं, तो यह समाज के उज्ज्वल भविष्य का संकेत है।

कार्यकर्ताओं के समर्पण ने रचा सफलता का इतिहासः शिविर की भव्य सफलता के पीछे यंग जैन स्टडी ग्रुप के समर्पित कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत और सेवा भावना रही। प्रीतेश जैन, अजय नीतू जैन, अजय मिंटा जैन, आमोद पहाड़िया, अमन जैन, रोहित जैन, तरुण जैन, श्रीमती खुशबू जैन, अंशुल जैन, अरिहंत जैन, अखिलेश रिंकल जैन, नरेश जैन, रितेश जैन, प्रमोद पहाड़िया, महेश जैन, आशीष जैन, श्रीमती सृष्टि जैन, श्रीमती किरण जैन, मुकेश जैन मामाजी, निलेश पाटोदी, राजकुमार जैन, आलोक जैन, दिनेश दिवाकर, पारस जैन, राजेश वेद, मुकेश बज, वीरेन्द्र जैन वीरू सहित यंग जैन स्टडी ग्रुप के अनेक कार्यकर्ताओं ने पूरे आठ दिनों तक व्यवस्थाओं को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी सेवा, अनुशासन और समर्पण ने इस शिविर को एक आदर्श आयोजन का स्वरूप प्रदान किया।

समापन पर प्रतिभाओं का सम्मान, अगले वर्षों की घोषणाः 10 मई को आयोजित समापन समारोह में प्रत्येक लेवल के प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

सामूहिक भोज हुआ, पुनः शिविर में आने के संकल्प और जैनत्व के संस्कारों को जीवन में उतारने की प्रेरणा के साथ शिविर का भावपूर्ण समापन हुआ।

पं. प्रकाश छाबड़ा ने घोषणा की कि आगामी संस्कार शिविर 3 मई से 10 मई 2027, 1 मई से 9 मई 2028, 1 मई से 9 मई 2029 तक आयोजित किए जाएंगे। पंजीयन की अंतिम तिथि प्रत्येक वर्ष 20 अप्रैल रहेगी।

नई पीढ़ी में संस्कार जागरण का महाअभियानः विगत ग्यारह वर्षों से निरंतर संचालित यह शिविर अब केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि नई पीढ़ी में संस्कार जागरण का महाअभियान बन चुका है। जहां एक ओर आधुनिकता बच्चों को स्क्रीन तक सीमित कर रही है, वहीं दूसरी ओर इन्दौर में हजारों बच्चे डिजिटल तकनीक के माध्यम से धर्म, अनुशासन, संयम और जैनत्व का पाठ सीख रहे हैं। यह दृश्य केवल प्रेरणादायक नहीं, बल्कि समाज के लिए आश्वस्ति का संदेश भी है कि संस्कारों की धारा आज भी जीवित है और नई पीढ़ी उसे पूरे उत्साह से स्वीकार कर रही है।

- राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद,
सह सम्पादक

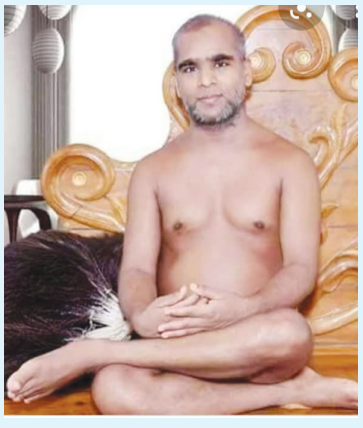

बीसवीं सदी के मुनिकुंजर ज्येष्ठाचार्य आदिसागर जी (अंकलीकर) के चतुर्थ पट्टाधीश प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती, महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चरित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन, वंदन

सन्मतिसुनीलम् पार्ट -2

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन
ऐसे आचार्य श्री सुनील सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

जो कर्त्तव्य निष्ठ होकर कार्य करता है उसे अधिकार भी मिलता है

-: नमनकर्ता :-

सुमन दीप परिवार बडोदरा
श्रीमती नीलम जैन मुम्बई
प्रमिला जैन बेन जयकुमार शाह भयन्दर मुम्बई
.....
.....

मदन जैन हुमड बडोदरा
मणि बेन साकल चन्द शाह भयन्दर मुम्बई
.....
.....
.....

विज्ञापन प्रेषकः R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी,
जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

स्वास्थ्य टिप्स : वजन घटाने के घरेलु उपाय

श्रीमती उषा पांड्या
धर्मपत्नी अनिल पांड्या
बनेठा वाले, जयपुर सांगानेर

गरम पानी का सेवन – रात को सोने से पूर्व व सुबह गरम पानी पीने से वो हमारे शरीर से विषैले पदार्थों को बाहर निकलता है, हमारा पाचन तंत्र बेहतर करता हैं, कब्ज कम करता है और इससे शरीर की त्वचा भी बेहतर बनती हैं। और गरम पानी में नींबू का रस मिला के पीने से, वो हमारे फैट को कम करता है और भूख नहीं लगने देता, इससे पतला होने में काफी मदद मिलती हैं। कई विद्वान जैसे बाबा रामदेव मानते हैं, अगर दिनभर सिर्फ गरम पानी का सेवन करें तो आप 3-5 किलो तक वेट लॉस कर सकते हैं, इसी कारण जापानी लोग मोटे नहीं होते। लेकिन ये आसान नहीं है, केवल गरम पानी पीने से संतुष्टि नहीं मिलती।

दाना मेथी पानी के साथ – इससे भूख नहीं लगती और फैट बर्न होता है। ये सबसे ज्यादा उपयोग में लिया जाने वाला घरेलू नुस्खा है, इसमें 1 चम्मच दाना मेथी रात को 1 ग्लास पानी में भिगो कर रख दें, और सुबह उस पानी को पी लें। पानी के साथ साथ, दाना मेथी भी खा लें। हाँ ये काफी कड़वी होती है पर ये काफी हेल्दी भी होती है और वजन कम करने में काफी सहायक होती है। आप इसे निगल भी सकते हैं, ये उतना ही फायदा करती हैं। इसमें Galactomannan तत्व होता हैं, जो हमें भराभरा महसूस कराता है और भूख भी नहीं लगने देता। जिससे हम दिन में कम कैलोरीज का सेवन करते हैं। दानामेथी चर्बी (फैट) को तोड़ने के साथ साथ, शुगर मेटबॉलिज्म को भी बढ़ाता है जिससे हम ज्यादा फैट बर्न कर पाते हैं। इसमें सॉल्युबल फाइबर होता है, जो कब्ज नहीं होने देता। इन सभी वजह से ये मोटापा घटाने में काफी मदद करता है। इसका एक और फायदा है, यह आपके शरीर की सूजन को भी कम करता है, जिससे आप और ज्यादा मोटे नहीं दिखते। इसे डायबिटीज और ब्लड प्रेशर के रोगी भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

जीरा अजवाइन का पानी – इससे पाचन तंत्र मजबूत होता हैं।

अजवाइन – अजवाइन में जेलउवस रसायन होता है, जिससे पाचन प्रक्रिया तेज हो जाती है। जो हमारी गैस की परेशानी को कम करता है, कब्ज नहीं होने देता। इससे मेटाबोलिज्म भी तेज हो जाता है, जिससे फैट ज्यादा बर्न होता है।

जीरा – जीरा इतना गुणकारी है, इसे पादरियों (पुजारी) का भोजन भी कहते हैं। ये वजन कम करने के साथ साथ फैट लॉस करता है। मतलब वजन के साथ साथ आपका आकार भी कम करता है या यूँ कहें ये वेट लॉस प्लाटु को सही करता है। जीरा थोड़ी देर के लिए मेटाबोलिज्म भी बढ़ाता है, इसीलिए इसे आप सब्जी में जरूर खाएँ। जीरा आपकी रोग प्रातिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है। एक रिसर्च के अनुसार, जीरा और अजवाइन को अपने डाइट चार्ट मैं जरूर रखें, ये भी एक बेहतरीन घरेलू नुस्खा है।

अलसी के बीजों का चूर्ण – ये आपको भरा भरा महसूस कराता है और पेट कम करता है। इसमें लेकटिन तत्व होता है जो हमारे भोजन में से हानिकारक फैट को निकालता है और अलसी चूर्ण में उपस्थित फाइबर और मूसी लगे तत्व उस फैट को शरीर से बाहर निकाल देते हैं, जिससे मोटापा घटता है। इसमें विटामिन और मिनरल्स के साथ ओमेगा 3 और फाइबर भी काफी होता है। मतलब ये वजन और पेट कम करने की मशीन की तरह काम करता है। अलसी के बीजों का चूरन बना के इस्तेमाल करें, क्योंकि हमारा शरीर इन बीजों को पचा नहीं पता और इसे खाने से ठीक पहले ही पिसें, नहीं तो इसका काफी की तरह इसका ऑक्सीकरण हो जाता है, जिससे ये उतना लाभकारी नहीं रहता। ये हमारी रोग प्रातिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता हैं और खराब कोलेस्ट्रॉल को निकाल देता है।

तिल – ये एक अच्छा शाकाहारी प्रोटीन का श्रोत है। तिल फैट बर्न करने वाला लिवर के एन्जाइम्स को बढ़ाता है, जिससे ज्यादा वजन घटता है। इसमें कई पोसक तत्व होते हैं, जैसे ओमेगा 3, मैगनीज, फास्फोरस, जिंक वगैरह। ये सभी हमें वजन कम करने में मदद करते हैं। आप इसे पीसकर इसका बटर भी बना सकते हैं, वो ज्यादा स्वादिष्ट लगता हैं।

अंकुरित सलाद – बचपन से ही हमें अंकुरित बीज खाने की सलाह दी जाती है, इससे हमें उर्जा मिलती है। वैज्ञानिक तौर पर ये प्रोटीन का अच्छा स्रोत होता है। सुबह सुबह प्रोटीन खाने से दिन भर के लिए ऊर्जा मिलती है और ये हमे जल्दी भूख भी नहीं लगने देता जिससे हम कम कैलोरीज का सेवन करते हैं और संतुष्ट भी रहते हैं। अंकुरित सलाद, जिसमें हम टमाटर, हरी मिर्ची, फ्लैक्ससीड्स का भी उपयोग करते हैं। ये सभी चीजें हमें कई विटामिन और मिनरल्स देती हैं, जिसकी हमारे शरीर को जरूरत होती है। रोज एक ही सलाद ना बनाएँ, हर दिन अलग सलाद बनाएँ, जैसे एक ही अंकुरित मूग, एक दिन अंकुरित चने, एक दिन छोले की, एक दिन राजमा की वगैरह। अंकुरित हो तो अच्छा है और दालें तो उबाल कर ही खा सकतें हैं, उन्हें उबालकर सलाद बनायें।

हॉट ग्रीन स्मूदी – ये धनिये का जूस हैं, ये एक फैट बर्निंग ड्रिंक है, जो दुबले होने लिये काफी सहायक है। इससे आप एक महीने में 5 किलो तक वजन कम कर सकते हैं। इसे सुबह लेना सबसे बेहतर होता है, इससे पाचन बेहतर होता है, इसमें काफी मात्रा में विटामिन ओ और ए होता है, ये एक अच्छा एंटीऑक्सीडेंट हैं जो हमारे प्रणाली को साफ करता है। इससे वजन कम होने के साथ साथ मधुमेह (डायबिटीज) भी नियंत्रित होती है।

जैन साधना केवल वस्त्र त्याग नहीं, बल्कि 28 मूलगुणों और कठोर तप-साधना का विज्ञान है

- आचार्य श्री सुनील सागरजी

सुमनदीप विद्यापीठ, वडोदरा (गुजरात)। दिनांक 14 मई को धर्मसभा में संबोधित करते हुए कहा कि समाज के अनेक लोग जैन साधना को केवल बाह्य रूप से देखते हैं और यह समझते हैं कि इसमें केवल वस्त्रों का त्याग होता है, जबकि वास्तविकता इससे कहीं अधिक गहन और कठिन है। जैन मुनि पांच महाव्रतों, 28 मूलगुणों तथा संपूर्ण चारित्र साधना से बंधा हुआ होता है, जिसमें प्रत्येक क्षण अनुशासन, संयम और आत्मशुद्धि का अभ्यास शामिल रहता है।

प्रवचन में सल्लेखना, संथारा एवं समाधि जैसे जैन धर्म के अत्यंत महत्वपूर्ण आध्यात्मिक पक्षों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। बताया गया कि सल्लेखना कोई सामान्य प्रक्रिया नहीं, बल्कि जैन शास्त्रों में वर्णित एक अत्यंत वैज्ञानिक, अनुशासित एवं कल्याणकारी साधना है, जिसे प्राचीन ग्रंथ भगवती आराधना तथा मरणकंडिका जैसे ग्रंथों में विस्तार से वर्णित किया गया है।

गुरदेव ने बताया कि सल्लेखना समाधि के लगभग 40 अधिकार (अध्याय) बताए गए हैं, जिनकी कसौटियों पर पूर्णतः खरा उतरने के बाद ही कोई साधक इस साधना के योग्य माना जाता है। सबसे पहले साधक की अर्हता, संयम क्षमता, दीक्षा की योग्यता और साधना के प्रति पात्रता की परख की जाती है। इसके पश्चात शरीर, स्वास्थ्य, आकृति, साधनात्मक क्षमता, शास्त्र ज्ञान, स्वाध्याय, विनय, नम्रता तथा मानसिक स्थिरता जैसे अनेक पक्षों का सूक्ष्म परीक्षण किया जाता है।

प्रवचन में स्पष्ट किया गया कि क्रोध, अभिमान, प्रसिद्धि की इच्छा अथवा किसी प्रकार के विषम परिणाम रखने वाला साधक सल्लेखना समाधि का अधिकारी नहीं हो सकता। समाधि का वास्तविक अर्थ निरंतर शांत परिणामों में स्थित होना है। केवल वही साधक समाधि का अधिकारी होता है जिसके भीतर विनम्रता, आत्मनिरीक्षण, प्रायश्चित, परिग्रह त्याग की भावना पूर्ण रूप से विकसित हो। आगे बताया कि सल्लेखना धारण करने वाला साधक एक स्थान पर स्थिर नहीं रहता, बल्कि जब तक शरीर समर्थ होता है तब तक योग्य क्षेत्र, शांत वातावरण और साधना के अनुकूल स्थान की खोज करते हुए विहार करता है, ताकि विधिपूर्वक तप, स्वाध्याय और आत्म कल्याण की प्रक्रिया पूर्ण हो सके।

धर्मसभा में उपस्थित श्रद्धालुओं ने जैन साधना के इस गहन आध्यात्मिक और वैज्ञानिक पक्ष को सुनकर गहरी श्रद्धा व्यक्त की।

– शेखर चंद पाटनी,
राष्ट्रीय संवाददाता

आगामी जनगणना: जैन एकता और अस्तित्व का महाअभियान

सुगालचन्द जैन, चेन्नई

भारत में शीघ्र ही राष्ट्रीय जनगणना होने जा रही है। यह केवल एक सरकारी प्रक्रिया नहीं, बल्कि जैन समाज के वास्तविक अस्तित्व, एकता और पहचान को सही रूप में प्रस्तुत करने का ऐतिहासिक अवसर है।

यदि हम स्वयं सजग नहीं रहेंगे, तो हमारी वास्तविक जनसंख्या कभी सही रूप में सामने नहीं आपाएगी। अतः देशभर के सभी जैन भाई-बहिनों से विनम्र निवेदन है कि जनगणना के समय अपनी धार्मिक पहचान पूर्ण सावधानी एवं जागरूकता के साथ दर्ज करवाएँ।

धर्म के कॉलम (सीरियल नम्बर 8) में केवल ''जैन'' तथा जैन कोड ''04'' ही लिखवाएँ।

विशेष ध्यान रखें कि यहाँ दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी, तेरापंथी, मूर्तिपूजक, गोत्र, ग्राम अथवा किसी उपसंप्रदाय का उल्लेख न करें।

सिर्फ और सिर्फ ''जैन-04'' लिखवाना अत्यंत आवश्यक है। जहाँ तक संभव हो, अपनी उपस्थिति में ही यह प्रविष्टि करवाएँ। जैन कोई जाति नहीं, बल्कि एक महान चारित्र प्रधान धर्म एवं जीवन पद्धति है। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, संयम और आत्मशुद्धि के मार्ग पर चलने वाला प्रत्येक व्यक्ति जैन कहलाता है।

जैन समाज में विविध भाषाओं, प्रदेशों एवं जातियों के लोग सम्मिलित हैं। इसलिए जाति वाले कॉलम (सीरियल नम्बर 9) में अपनी वास्तविक जाति जैसे ओसवाल, पोरवाल, अग्रवाल, मेघवाल, क्षत्रिय, सुनार, कास्टगार आदि जो भी हो, वही लिखें। मातृभाषा वाले कॉलम (सीरियल नम्बर 15) में अपनी वास्तविक मातृभाषा ही लिखें। इससे यह जानकारी भी स्पष्ट होगी कि जैन साहित्य एवं जैन संस्कृति देश-विदेश की कितनी भाषाओं में जीवित और समृद्ध है।

यह समय आपसी भेद भूलकर सम्पूर्ण जैन समाज को एक सूत्र में बाँधने का है। जब पूरे भारत के जैन एक समान रूप से ''जैन - 04'' लिखवाएँगे, तभी देश में जैन समाज की वास्तविक संख्या, शक्ति और उपस्थिति सही रूप में सामने आएगी।

हमारी सजगता ही आने वाली पीढ़ियों के अस्तित्व, अधिकार और पहचान की आधारशिला बनेगी।

आइए, संकल्प लें – ''हम सब पहले जैन हैं, बाकी पहचान बाद में है।'' इस महत्वपूर्ण संदेश को प्रत्येक जैन परिवार, समाज, संगठन एवं युवा वर्ग तक अवश्य पहुँचाएँ।

समाज से विनम्र निवेदन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा की जा रही धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की योजनाओं में दान देकर सहयोग प्रदान कीजिये।
संस्था को 12 I/80G (प्रमाण पत्र संख्या URN-AAHTS7154EF2025101)
एवं CSR-1 (प्रमाण पत्र संख्या -SRN-N30616809) के तहत आयकर में छूट प्राप्त है।
संपर्क : मोबाइल/वाट्सअप - 9415008344, 9415108233, 7607921391, 7505102419

SHRI BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN MAHASABHA
ACCOUNT NO. - 2405000100033312
RTGS/IFSC/NEFT Code - PUNB0185600 PUNJAB NATIONAL BANK, RAJENDRA NAGAR, Lucknow Pin Code - 226004 (U.P.)

रिश्तों का बाजार और बिखरता परिवार : हम कहाँ से कहाँ आ गए?

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

"रिश्ते जब सौदे बन जाते हैं, तो घर मकान बन जाते हैं और दिल बाजार।"

आज का कटु सत्य यही है कि जहाँ पहले रिश्ते दिल से बनते थे, वहाँ अब वे शर्तों और सुविधाओं की सूची से तय हो रहे हैं। विवाह, जो कभी दो आत्माओं और दो परिवारों का पवित्र मिलन माना जाता था, अब कई जगह एक ''प्रोजेक्ट'' या ''डील'' बन गया है- जिसमें पैकेज, प्रॉपर्टी, प्रोफाइल और स्टेटस का आकलन पहले होता है, जबकि संस्कार, स्वभाव और चरित्र को बाद में महत्व दिया जाता है।

पहले परिवारों में सादगी, विश्वास और अपनापन मुख्य आधार हुआ करता था। माता-पिता बच्चों को यह सिखाते थे कि रिश्ते निभाने के लिए त्याग, सहनशीलता और समर्पण आवश्यक है। छोटी-छोटी बातों पर समझौता कर लिया जाता था, क्योंकि संबंधों को बचाना सबसे बड़ी प्राथमिकता होती थी। लेकिन आज परिस्थितियाँ बदल गई हैं। आधुनिक जीवनशैली, सोशल मीडिया की चमक, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और बढ़ती भौतिकता ने रिश्तों को भी एक तरह की ''प्रतिस्पर्धा'' बना दिया है। आज कई जगह विवाह से पहले यह देखा जाता है कि सामने वाले की आय कितनी है, घर कितना बड़ा है, गाड़ी कौन-सी है, और सामाजिक प्रतिष्ठा कैसी है। इन सबके बीच यह प्रश्न अक्सर पीछे छूट जाता है कि क्या दोनों के विचार, संस्कार और जीवन के मूल्य एक जैसे हैं। परिणाम यह होता है कि दिखावे पर बने रिश्ते थोड़े समय बाद टूटने लगते हैं और परिवार बिखरने लगते हैं।सबसे दुखद बात यह है कि इस बदलाव का असर केवल पति-पत्नी तक सीमित नहीं रहता, बल्कि माता-पिता, बच्चों और पूरे परिवार की भावनाओं को प्रभावित करता है। जहाँ घर में प्रेम और विश्वास होना चाहिए, वहाँ कई बार अपेक्षाओं और शिकायतों का माहौल बन जाता है। समय की माँग है कि हम फिर से रिश्तों के मूल मूल्य- प्रेम, विश्वास, त्याग और समझ-को अपनाएँ। यदि रिश्तों को बाजार बनने से बचाना है, तो हमें यह याद रखना होगा कि सच्चे संबंध पैसों से नहीं, बल्कि दिलों के जुड़ाव से बनते हैं। जब हम इस सत्य को समझेंगे तभी परिवार फिर से मजबूत और सुखी बन पाएँगे।

1. पहले रिश्ते क्यों टिकते थे? – पुराने समय में विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों और दो संस्कारों का मिलन माना जाता था। इसलिए रिश्ता तय करते समय सबसे पहले पूछा जाता था-''खानदान कैसा है?'' इस प्रश्न के पीछे केवल आर्थिक स्थिति नहीं, बल्कि उस परिवार के संस्कार, व्यवहार, प्रतिष्ठा और सामाजिक जिम्मेदारी की झलक छिपी होती थी। लोग यह देखते थे कि उस घर में बड़ों का सम्मान होता है या नहीं, परिवार के सदस्य एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ खड़े होते हैं या नहीं, और क्या वहाँ सादगी तथा संयम का वातावरण है। उस समय रूप-रंग, वेतन या पद को उतना महत्व नहीं दिया जाता था जितना स्वभाव और चरित्र को। क्योंकि लोग समझते थे कि बाहरी आकर्षण समय के साथ बदल जाता है, लेकिन संस्कार जीवन भर साथ रहते हैं। तभी कहा जाता था-''सुंदरता चाँद की तरह घटती-बढ़ती है, पर संस्कार सूर्य की तरह स्थिर रहते हैं।'' शायद यही कारण था कि रिश्तों में सहनशीलता, त्याग और समझ बनी रहती थी और विवाह केवल संबंध नहीं, बल्कि जीवनभर की जिम्मेदारी बन जाता था।

2. साइकिल वाला राजकुमार क्यों नहीं चाहिए? – एक समय था जब किसी युवक की योग्यता उसके साधनों से नहीं, बल्कि उसके चरित्र और मेहनत से आँकी जाती थी। वह साइकिल चलाता है या स्कूटर, यह कोई बड़ी बात नहीं मानी जाती थी। लोग यह देखते थे कि वह मेहनती है या नहीं, जिम्मेदार है या नहीं और परिवार के प्रति उसका दृष्टिकोण कैसा है। समाज का विश्वास था कि ईमानदार और मेहनती व्यक्ति धीरे-धीरे जीवन में आगे बढ़ ही जाता है। लेकिन आज कई बार स्थिति उलट गई है। अब किसी युवक का मूल्यांकन उसके स्वभाव से अधिक उसकी कार, घर और बैंक बैलेंस से किया जाने लगा है। कई परिवार यह सोचते हैं कि यदि लड़का पहले से ही बहुत सम्पन्न है, तो बेटी को जीवन में कठिनाई नहीं होगी। लेकिन यह सोच हमेशा सही साबित नहीं होती। क्योंकि धन से सुविधा खरीदी जा सकती है, पर अच्छा स्वभाव और सम्मान नहीं। वास्तव में समस्या साधनों की नहीं, बल्कि मानसिकता की है। जब धन को साधन के बजाय जीवन का लक्ष्य बना लिया जाता है, तब अपेक्षाएँ बढ़ती जाती हैं और रिश्तों में संतोष कम होता जाता है।

3. दहेज और सुविधा की मानसिकता – आज विवाह के निर्णयों में सुविधा और लाभ की मानसिकता तेजी से बढ़ती दिखाई देती है। कई बार लड़के वाले अच्छे दहेज, महंगे उपहार और आर्थिक लाभ की अपेक्षा रखते हैं, जबकि लड़की वाले चाहते हैं कि लड़का बहुत अमीर हो ताकि बेटी को जीवन में कोई परेशानी न हो। इस सोच के कारण विवाह धीरे-धीरे साझेदारी के पवित्र संबंध से हटकर लाभ-हानि के सौदे जैसा बनने लगता है। शुरुआत में सब कुछ आकर्षक और भव्य लगता है-बड़ी शादी, महंगे उपहार और सामाजिक प्रतिष्ठा। लेकिन यदि रिश्ते में सम्मान, समझ और संवेदना नहीं है, तो यह चमक बहुत जल्दी फीकी पड़ जाती है। कई परिवार बेटी की खुशी के लिए बहुत धन खर्च कर देते हैं, परंतु यदि ससुराल में उसे सम्मान नहीं मिलता, तो वही धन और वैभव भी बोझ बन जाता है। इसलिए कहा जाता है- ''जहाँ सम्मान नहीं, वहाँ सुविधा भी बोझ बन जाती है।'' रिश्ते का आधार धन नहीं, बल्कि विश्वास और सम्मान होना चाहिए।

4. छोटा परिवार – कितना छोटा? – आज के समय में विवाह से पहले अक्सर यह कहा जाता है कि परिवार छोटा होना चाहिए ताकि जिम्मेदारियाँ कम रहें और हस्तक्षेप भी न हो। आधुनिक जीवन की व्यस्तता में यह सोच कुछ हद तक व्यावहारिक भी लगती है। लेकिन धीरे-धीरे यह सोच इतनी बढ़ गई है कि परिवार से दादा-दादी, चाचा-चाची और अन्य रिश्तों का स्नेहपूर्ण वातावरण ही समाप्त होने लगा है। पहले संयुक्त परिवारों में अनुभव और सहयोग का एक मजबूत आधार होता था। यदि पति-पत्नी के बीच किसी बात पर मतभेद हो जाता था, तो घर के बड़े लोग अपने अनुभव से समझा देते थे और समस्या बढ़ने से पहले ही सुलझ जाती थी। बच्चों को भी परिवार के कई सदस्यों से संस्कार और स्नेह मिलता था। आज छोटे परिवारों में हर समस्या का समाधान केवल पति-पत्नी को ही करना पड़ता है। परिणाम यह होता है कि छोटी-छोटी बातें भी बड़े विवाद का रूप ले लेती हैं। इसलिए परिवार छोटा होना गलत नहीं है, लेकिन इतना छोटा भी नहीं होना चाहिए कि रिश्तों की गर्माहट ही समाप्त हो जाए।

5. ''हमने बेटी से कभी घर का काम नहीं कराया'' – आज कई माता-पिता गर्व से कहते हैं- ''हमने बेटी से कभी घर का काम नहीं कराया।'' मानो घर का काम करना किसी हीनता या कमजोरी की निशानी हो। लेकिन वास्तविकता यह है कि घर संभालना भी एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी और एक कला है। इसमें समय प्रबंधन, सहयोग, धैर्य और समझ की आवश्यकता होती है। पहले लड़कियाँ पढ़ाई के साथ-साथ घर के काम भी सीखती थीं और इसे जीवन कौशल का हिस्सा मानती थीं। इससे उनमें जिम्मेदारी और आत्मनिर्भरता का भाव विकसित होता था। आज शिक्षा और करियर को महत्व मिलना निश्चित रूप से अच्छी बात है, लेकिन जीवन के व्यावहारिक कौशल भी उतने ही आवश्यक हैं। क्योंकि जीवन केवल नौकरी या डिग्री से नहीं चलता, बल्कि समझदारी, सहयोग और व्यवहार से चलता है। तभी कहा जाता है- ''डिग्री जीवन नहीं चलाती, विवेक और व्यवहार चलाते हैं।'' जब शिक्षा के साथ जीवन कौशल भी जुड़े हों, तभी व्यक्ति वास्तव में जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार होता है।

6. नौकरी वाली ही लड़की क्यों? – नौकरी करने वाली लड़की ही चाहिए। तर्क यह दिया जाता है कि यदि दोनों कमाएँगे तो जीवन स्तर ऊँचा होगा, आर्थिक सुरक्षा बढ़ेगी और जीवन अधिक सुविधाजनक बनेगा। सिद्धांत रूप में यह विचार गलत नहीं है, क्योंकि आज की महँगाई और बदलती जीवनशैली में दो लोगों की आय परिवार को स्थिरता दे सकती है। परंतु समस्या तब उत्पन्न होती है जब इस व्यवस्था के साथ संतुलन और समझ नहीं होती। कई बार दोनों पति-पत्नी कमाते तो हैं, लेकिन घर की जिम्मेदारियों को लेकर विवाद होने लगता है-कौन घर का काम करेगा, कौन माता-पिता की देखभाल करेगा। आर्थिक स्वतंत्रता कभी-कभी अहंकार को भी जन्म दे देती है। दोनों शिक्षित होते हुए भी सहनशीलता कम होने के कारण छोटी-छोटी बातें टकराव का कारण बन जाती हैं। कभी-कभी यह भी कहा जाता है- ''वह खुद कमाती है, तो क्यों किसी की इज्जत करेगी?'' यह सोच ही गलत है। सम्मान वेतन से नहीं, बल्कि संस्कार, विनम्रता और आपसी समझ से पैदा होता है। यदि रिश्तों में सम्मान और सहयोग की भावना है, तो चाहे एक कमाए या दोनों, परिवार सुखी रह सकता है।

7. सुविधा बढ़ी, संतोष घटा – आज का समय तकनीकी सुविधाओं का समय है। लगभग हर घर में वॉशिंग मशीन, मिक्सर, मोटर, टीवी और मोबाइल जैसी अनेक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इन साधनों ने जीवन को पहले की तुलना में काफी आसान बना दिया है। घरेलू काम जल्दी हो जाते हैं, मनोरंजन के अनेक साधन उपलब्ध हैं और दुनिया की जानकारी भी एक क्लिक में मिल जाती है लेकिन एक विचित्र विरोधाभास यह है कि सुविधाएँ बढ़ने के बावजूद संतोष कम होता जा रहा है। पहले परिवार के लोग शाम को साथ बैठते थे, दिनभर की बातें साझा करते थे और एक-दूसरे की खुशियों-दुखों में सहभागी बनते थे। परिवार ही मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन होता था। आज स्थिति बदल गई है। एक ही कमरे में चार लोग बैठते हैं, पर चारों के हाथ में अलग-अलग मोबाइल होता है और हर व्यक्ति अपनी-अपनी डिजिटल दुनिया में खोया रहता है। बातचीत कम हो गई है, भावनात्मक जुड़ाव कमजोर पड़ गया है इसलिए कहा जाता है- ''तकनीक ने दूरी घटाई, पर दिलों की दूरी बढ़ा दी।'' यदि सुविधाओं के साथ संबंधों का संवाद और अपनापन न रहे, तो जीवन में संतोष का अभाव स्वाभाविक हो जाता है।

8. सहनशीलता का अभाव – परिवार का आधार केवल प्रेम नहीं, बल्कि सहनशीलता और समझ भी है। घर-परिवार तभी चलता है जब लोग कभी-कभी एक-दूसरे के लिए झुकना सीखते हैं। यदि हर व्यक्ति केवल अपनी बात को ही सही मानने लगे और झुकने से इंकार कर दे, तो रिश्तों में तनाव बढ़ना स्वाभाविक है।

आज के समय में ''मैं क्यों झुकूँ?'' की मानसिकता बढ़ती जा रही है। हर व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है, जो अच्छी बात है, लेकिन कर्तव्यों की भावना धीरे-धीरे कम होती जा रही है। परिणाम यह होता है कि छोटी-छोटी बातें भी विवाद का कारण बन जाती हैं। उदाहरण के लिए, पहले यदि खाने में नमक थोड़ा अधिक हो जाता था, तो परिवार के लोग मुस्कराकर कह देते थे- ''आज नमकीन थोड़ा ज्यादा हो गया।'' बात वहीं समाप्त हो जाती थी। लेकिन आज वही छोटी-सी बात कई बार तकरार का कारण बन जाती है। सच्चाई यह है कि जहाँ ''मैं'' का अहंकार बड़ा हो जाता है, वहाँ ''हम'' का भाव छोटा पड़ जाता है। रिश्तों को बचाने के लिए धैर्य, विनम्रता और सहनशीलता आवश्यक है।

9. आत्म हत्या और तलाक: दुखद अंत - आज के समय में रिश्तों में बढ़ते तनाव का एक गंभीर परिणाम यह भी दिखाई दे रहा है कि कई विवाह जल्दी टूटने लगे हैं। असहिष्णुता, तुलना, बढ़ती अपेक्षाएँ और संवाद की कमी-ये सभी मिलकर मानसिक दबाव पैदा करते हैं। जब पति-पत्नी के बीच खुलकर बातचीत नहीं होती और समस्याओं का समाधान नहीं निकलता, तो तनाव धीरे-धीरे गहराता जाता है। कुछ मामलों में यह तनाव इतना बढ़ जाता है कि लोग अत्यंत दुखद और कठोर निर्णय लेने लगते हैं। कहीं तलाक की स्थिति बन जाती है, तो कहीं लोग निराशा में आत्महत्या जैसे कदम भी उठा लेते हैं। यह केवल दो व्यक्तियों की नहीं, बल्कि दो परिवारों की पीड़ा बन जाती है। इसलिए यह समझना आवश्यक है कि जीवन हमेशा एक जैसा नहीं रहता। इसमें उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। कठिन परिस्थितियाँ स्थायी नहीं होतीं। यदि धैर्य, संवाद और समझदारी से समस्याओं का सामना किया जाए, तो कई बड़े संकट भी धीरे-धीरे हल हो सकते हैं। रिश्तों को बचाने के लिए सबसे जरूरी है-समय पर संवाद और एक-दूसरे को समझने की कोशिश।

10. ससुराल और कॉलेज की तुलना – कभी-कभी कहा जाता है कि पहली बार ससुराल जाना कुछ-कुछ कॉलेज में प्रवेश लेने जैसा होता है। शुरुआत में सब कुछ नया और थोड़ा असहज लगता है। नए लोग, नया वातावरण और नई जिम्मेदारियाँ-इन सबके कारण व्यक्ति को थोड़ा समय लगता है खुद को ढालने में। जैसे कॉलेज में नए छात्रों को शुरुआत में हल्की-फुल्की ''रैगिंग'' का सामना करना पड़ता है, वैसे ही कई बार ससुराल में भी नई बहू को परिवार की परंपराओं और नियमों को समझने में समय लगता है। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, वही नया छात्र धीरे-धीरे सीनियर बन जाता है, वैसे ही बहू भी समय के साथ परिवार का महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती है। इस उदाहरण का उद्देश्य यह समझाना है कि नए रिश्तों को समय देना जरूरी होता है। शुरुआत की छोटी-छोटी असहजताओं को धैर्य और समझ से संभाला जा सकता है हालाँकि इसका अर्थ यह नहीं कि किसी प्रकार का अन्याय या अत्याचार सहन किया जाए। बल्कि इसका संदेश यह है कि संवाद, संयम और समझदारी के साथ रिश्तों को समय दिया जाए, ताकि वे धीरे-धीरे मजबूत बन सकें।

11. सही उम्र में विवाह और बड़ों की सलाह – जीवन में हर कार्य का एक उचित समय होता है, और विवाह भी उनमें से एक है। सही उम्र में विवाह होने से व्यक्ति मानसिक रूप से अधिक संतुलित और जिम्मेदार बन पाता है। जब विवाह बहुत अधिक देर से होता है, तो कई बार व्यक्ति की आदतें और अपेक्षाएँ इतनी मजबूत हो जाती हैं कि नए रिश्ते में सामंजस्य बैठाना कठिन हो जाता है। इसलिए समय पर विवाह जीवन की स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण माना गया है।

इसके साथ ही बड़ों की सलाह का भी बहुत महत्व है। माता-पिता और परिवार के बुजुर्ग जीवन के अनेक उतार-चढ़ाव देख चुके होते हैं। उनके अनुभवों में जीवन की सच्चाई और व्यवहारिक समझ छिपी होती है। अक्सर युवा भावनाओं या आकर्षण में निर्णय ले लेते हैं, जबकि बुजुर्ग दूरदर्शिता से सोचते हैं। कहा भी गया है- ''अनुभव वह शिक्षक है, जो गलती के बाद पढ़ाता है।'' इसलिए यदि हम बड़ों के अनुभव से पहले ही सीख लें, तो कई गलतियों से बच सकते हैं। विवाह जैसे महत्वपूर्ण निर्णय में परिवार की सलाह, धैर्य और समझदारी रिश्तों को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

12. समाधान क्या है? – आज यदि रिश्तों में दूरी बढ़ रही है, तो उसका समाधान भी हमारे ही हाथों में है। सबसे पहले हमें अपनी अपेक्षाओं को थोड़ा कम करना होगा। कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं होता। हर इंसान में कुछ गुण होते हैं और कुछ कमियाँ भी होती हैं। यदि हम हर व्यक्ति से पूर्णता की अपेक्षा करेंगे, तो निराशा ही हाथ लगेगी। इसलिए यह समझना आवश्यक है कि पूर्णता केवल ईश्वर में है। दूसरा महत्वपूर्ण उपाय है संवाद। जब परिवार के सदस्य एक-दूसरे से खुलकर बात करते हैं, तो कई समस्याएँ अपने आप हल हो जाती हैं। मौन कई बार गलतफहमियों को बढ़ा देता है, जबकि संवाद समाधान का रास्ता खोलता है। तीसरी बात है संस्कारों को प्राथमिकता देना। धन, रूप और नौकरी समय के साथ बदल सकते हैं, पर व्यक्ति का स्वभाव और उसके संस्कार लंबे समय तक साथ रहते हैं। इसके साथ तकनीक का संतुलित उपयोग भी जरूरी है। मोबाइल और इंटरनेट जीवन को आसान बनाने के साधन हैं, लेकिन यदि वे रिश्तों की जगह लेने लगें तो समस्या पैदा होती है। सबसे महत्वपूर्ण है सहनशीलता और सम्मान। घर में छोटे-बड़े सभी का आदर किया जाए, क्योंकि जो सम्मान हम देते हैं, वही ब्याज सहित लौटकर आता है।

13. अंतिम विचार – आज का समय एक अजीब विरोधाभास से भरा हुआ है। हम भौतिक सुविधाओं में पहले से कहीं अधिक आगे बढ़ चुके हैं, लेकिन संबंधों के मामले में कई बार पीछे छूटते जा रहे हैं। घर बड़े हो गए हैं, लेकिन दिल छोटे होते जा रहे हैं। सुविधाएँ बढ़ गई हैं, लेकिन संतोष कम हो गया है। आज हमें स्वयं से यह प्रश्न पूछने की आवश्यकता है कि क्या हम रिश्तों को भी बाजार की वस्तु की तरह तौलते रहेंगे, या फिर उन्हें प्रेम और विश्वास से सींचेंगे। जीवन का वास्तविक सुख भव्य घरों और महंगी वस्तुओं में नहीं, बल्कि छोटे-छोटे पलों की खुशियों में छिपा होता है। सच तो यह है कि-÷दो रोटी, छोटा सा घर और आपसी प्रेम ही जीवन का असली वैभव है।÷ समय आ गया है कि हम आत्ममंथन करें और सोचें कि हम कहाँ से कहाँ आ गए हैं और आगे हमें किस दिशा में जाना है। यदि हम अभी भी नहीं जागे, तो आने वाली पीढ़ियाँ सुविधाओं से भरे घरों में तो रहेंगी, पर भावनात्मक रूप से अकेली होंगी। लेकिन यदि हम अपनी सोच बदलें और रिश्तों को महत्व दें, तो वही स्नेह, वही अपनापन और वही पारिवारिक ऊष्मा फिर से लौट सकती है। क्योंकि रिश्ते सौदे नहीं, विश्वास की डोर होते हैं-उन्हें बाजार में नहीं, दिल की मिट्टी में उगाना पड़ता है।

हाईकोर्ट के फैशले के खिलाफ भोजशाला विवाद में

जैन याचिकाकर्ता सुप्रीम कोर्ट जायेंगे

इंदौर, 15 मई। मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित भोजशाला विवाद में मध्य प्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर पीठ द्वारा जैन समाज की याचिका खारिज किए जाने और परिसर को हिंदू मंदिर घोषित करने के फैसले पर जैन समाज सलेकचंद जैन का प्रतिनिधित्व कर रहीं अधिवक्ता प्रिया जैन ने अदालत के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देने की बात कही है। हाईकोर्ट के फैसले के बाद मीडिया से बातचीत में उन्होंने स्पष्ट किया कि वे इस फैसले के खिलाफदेश की सर्वोच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाएंगे, उन्होंने कहा कि हमारी लड़ाई किसी हिंदू या मुस्लिम से नहीं बल्कि कानून से है और हम उस स्थान पर अपने अधिकारों के लिए सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देंगे। वकील प्रिया जैन ने दावा किया कि जब अंग्रेज भोजशाला से मूर्ति वाग्देवी को लंदन ले गए थे तो उन्होंने खुद स्वीकार किया था कि यह एक जैन मूर्ति है, वहां के शिलालेखों पर आज भी इसका जिक्र है। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक शिलालेखों से यह साफ जाहिर होता है कि वह मूर्ति जैन यक्षिणी है, जैन पक्ष के अनुसार जिसे वाग्देवी सरस्वती कहा जा रहा है वह असल में जैन समुदाय की आराध्य मां अंबिका की प्रतिमा है, उन्होंने कहा कि एएसआई के वैज्ञानिक सर्वे और पुरातत्व विभाग की रिपोर्ट में जो साक्ष्य मिले हैं वे खुद दर्शाते हैं कि यह जैन वाग्देवी और जैन सरस्वती की मूर्ति है, इससे पहले उन्होंने एएसआई की रिपोर्ट पर यह सवाल भी उठाया था कि सर्वे में जैन तीर्थकरों की खंडित मूर्तियां मिलने के बावजूद रिपोर्ट में उन्हें जैन

रिश्ता कैसा भी हो, मन से होना चाहिए, मतलब से नहीं

पारस जैन 'पार्श्वमणि' पत्रकार, कोटा

सच्चे रिश्ते कमाइए, क्योंकि यही जिंदगी की असली दौलत है

ये एक पंक्ति आज के दौर का सबसे बड़ा सच बयान कर देती है। कुछ गीत मुझे बहुत अच्छा लगते हैं जिसके बोल हैं रिश्ते नाते प्यार वफा सब बाते हैं बातों का क्या। मतलबी हैं लोग यहाँ पर मतलबी जमाना सोचा साया साथ देगा वो निकला बेगाना। आज के समय ये लाइन एक दम सही साबित होती प्रतीत होती हैं। हम एक ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जहाँ रिश्ते बनाने से ज्यादा रिश्ते 'मैनेज' किए जा रहे हैं। सोशल मीडिया पर फ्रेंड लिस्ट बहुत ही लंबी है, पर दिल की बात करने वाला कोई एक भी नहीं मिलता। जब काम पड़ता है तो एक भी नहीं आता है। इसका कारण यही है कि हमारा ज्यादातर जुड़ाव अब दिल से नहीं, दिमाग के कैलकुलेशन से होता है।

मतलब के रिश्ते - चमक-दमक और खोखलापनः

मतलब का रिश्ता ठीक वैसे ही है जैसे बाजार का सौदा। जब तक फायदा है तब तक साथ है। ऑफिस में बॉस से मीठी बात, नेता से पहचान, अमीर रिश्तेदार से आना-जाना, ये सब अक्सर मतलब की डोर से 'धे होते हैं। ऐसे रिश्तों की उम्र बहुत छोटी होती है। पद चला गया, पैसा खत्म हो गया, जरूरत पूरी हो गई, तो फोन उठना भी बंद हो जाते हैं। मुसीबत के वक्त ऐसे लोग कन्नी काट लेते हैं। ऐसे रिश्ते इंसान को अंदर से खाली कर देते हैं। भीड़ में भी अकेलापन महसूस होता है।

मन के रिश्ते - सुकून की असली पूंजी :

मन से जुड़ा रिश्ता न तो जाति देखता है, न हैसियत। वो बस भाव देखता है। माँ का बच्चे से, दोस्त का दोस्त से, गुरु का शिष्य से रिश्ता मन का होता है। इसमें 'मैं क्या दूं, मुझे क्या मिलेगा' का हिसाब नहीं होता।

मन के रिश्ते की पहचान बहुत आसान है। ऐसा इंसान आपकी आंखों की नमी बिना बताए पढ़ लेगा। आपकी झूठी हंसी के पीछे का दर्द पकड़ लेगा। आप हारोगे तो वो आपको उठाएगा और जीतोगे तो दुनिया से पहले ताली बजाएगा। उसकी खुशी में आपका चेहरा चमकता है और आपके दुख में उसकी रातों की नींद उड़ जाती है।

कोरोना महामारी ने हमें हर परिस्थिति में सादगी में जीना सिखा दिया था।

रिश्तों को कैसे बचाएं ?

1. **उम्मीद कम, एहसास ज्यादा'** – हर रिश्ते से कुछ पाने की उम्मीद छोड़ दें। पहले खुद देने वाले बनें।

2. **वक्त दीजिए** – रिश्ते व्हाट्सएप के मैसेज से नहीं, साथ बैठकर बिताए वक्त से मजबूत होते हैं।

3. **माफ करना सीखें** – मन के रिश्तों में गलती की गुंजाइश होती है। छोटी बातों को दिल से न लगाएं।

4. **मतलब से बचें** – किसी से रिश्ता बनाने से पहले खुद से पूछें - अगर कल इसे मेरी जरूरत न रहे, तो क्या मैं फिर भी इसका साथ दूंगा?

निष्कर्ष – जिंदगी के आखिरी पड़ाव पर बैंक बैलेंस नहीं, साथ बिताए पल याद आते हैं। बड़ी गाड़ी, बड़ा मकान देखकर लोग आते हैं, पर अर्थी को कंधा मन के रिश्ते ही देते हैं। इसलिए रिश्ता माँ-बाप का हो, भाई-बहन का हो, पति-पत्नी का हो या दोस्ती का, उसे मतलब की तराजू पर मत तौलो। जहाँ मन मिल जाते हैं, वहाँ हजार मील की दूरी भी मायने नहीं रखती। और जहाँ मन नहीं मिलते, वहाँ एक छत के नीचे रहकर भी लोग अजनबी बने रहते हैं। सच्चे रिश्ते कमाइए, क्योंकि यही जिंदगी की असली दौलत है। मुझे लास्ट में एक गीत और याद आ रहा है एक दिन बिक जाएगा माटी के मोल जग में रह जायेंगे प्यारे तेरे बोल।

हीरक जयंती- वैवाहिक गठबंधन दिवस

समाज गौरव श्री कमल बाबू जैन संग श्रीमती कला जैन को 60वें वैवाहिक दिवस के मंगलमय अवसर पर बहुत बहुत हार्दिक बधाई

राजाबाबू गोधा, संवाददाता (राजस्थान)

12 मई 2026। प्रसिद्ध समाजसेवी देव, शास्त्र, गुरु के परम भक्त, समाज गौरव श्री कमल बाबू जैन-श्रीमती कला देवी जैन की 12 मई 2026 को 60वीं वैवाहिक वर्षगांठ पर हीरक जयंती डायमंड जुबली जोर शोर से मनाई गई। कार्यक्रम में ऑल इंडिया जैन बैंकर्स के भागचंद जैन मित्र पुरा ने बताया कि आप न केवल जैन समाज में, बल्कि सम्पूर्ण समाज में एक सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व के धारक हैं, आप समाज के लगभग सभी संगठनों से जुड़े हुए हैं एवं और सभी संगठन अपने संगठन में आपकी सहज छवि का समावेशन चाहते हैं। आपको अपने समीप पाकर सभी गौरव का अनुभव करते हैं, स्पष्ट है आपकी मात्र उपस्थिति ही संस्थाओं को जीवंत बना देती है, आपके व्यक्तिगत जीवन में भी सहजता, सरलता, सामान्यता और सौम्यता का जीवन आपकी दिनचर्या का भाग है। जो भी आपके संपर्क में आता है, वह समर्पित भाव के साथ आपका ही हो जाता है, आपने धार्मिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है, आचार्य संघों और आर्यिका संघों के चातुर्मास का 25 से अधिक बार प्रभावपूर्ण संयोजन किया है। आपके संपादन में प्रथमाचार्य शांतिसागर जी, आचार्य

वर्धमान सागर जी और गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण की यशोगाथाओं पर आधारित एक कालजयी स्मारिका प्रकाशित करवाई गई है, ये स्मारिकाएं आपके श्रमणों से जुड़ाव को अभिव्यक्त करती है।

आप वास्तव में समाज के लिए एक अमूल्य धरोहर हैं, जो धर्म के संरक्षण और संवर्धन के साथ-साथ सामाजिक उत्थान के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, आपका समर्पण एवं उत्साह इसी तरह बना रहे।

इस उम्र में भी आपकी सक्रियता आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी है, समाज आपके मार्गदर्शन, संयोजन, निर्देशन, संरक्षण और समन्वय से सदैव लाभान्वित होते रहने हेतु आशान्वित है।

आज इस सुखद अनुभूत अवसर पर आपके सुख, शांति, समृद्धि और स्वास्थ्य से परिपूर्ण जीवन की मंगल कामना करते हैं। उक्त दिवस पर श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र के यशस्वी अध्यक्ष श्री सुधांशु कासलीवाल, धर्म संरक्षणी महासभा के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया, तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष धर्मचंद जैन पहाड़िया, न्यायाधिपति एन. के. जैन, अंतर्राष्ट्रीय रत्न व्यवसायी विवेक काला, मुनिभक्त उत्तम कुमार पांड्या, धर्म जागृति संस्थान राजस्थान के अध्यक्ष पदम बिलाला, जैन बैंकर्स के पी.सी. छाबड़ा, राजस्थान जैन सभा के यशस्वी अध्यक्ष सुभाष जैन, मुनि सेवा समिति राजस्थान के अध्यक्ष देव प्रकाश खण्डाका, छोटा गिरनार बापू गांव के संरक्षक अनिल जैन पांड्या बनेठा वाले, अध्यक्ष प्रकाश बाकलीवाल निमोडिया, बाड़ा पदमपुरा के यशस्वी अध्यक्ष एडवोकेट सुधीर जैन, राजस्थान जैन सभा के उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा, अनोखी पत्रिका के मनीष वेद, शाबाश इंडिया के राकेश गोदिका, समाजसेवी विनीत चांदवाड़, तथा जैन गजट के राजाबाबू गोधा सहित सभी संस्थानों के पदाधिकारियों ने श्री कमल बाबू जैन श्रीमती-कलादेवी जैन के दांपत्य जीवन की सुखमय कामना करते हुए शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

आचार्यश्री सुनील सागर जी को श्रीफल भेंट करने जयपुर जैन समाज वडोदरा रवाना

वर्ष 2027 में धावास में होगा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव: चातुर्मास के लिए करेंगे निवेदन- मनायेंगे 50वां अवतरण दिवस

शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

जयपुर। आदिसागर अंकलीकर परम्परा के चतुर्थ पट्टाधीश, राष्ट्र संत, दिगम्बर जैन आचार्य श्री 108 सुनील सागर महाराज को धावास-जयपुर में निर्माणाधीन भव्य शांतिनाथ जिनालय का वर्ष 2027 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव आयोजित कराये जाने के लिए श्रीफल भेंट करने हेतु धावास-जयपुर जैन समाज का 21 सदस्यीय दल वडोदरा के लिए रवाना हुआ। खुशबू छाबड़ा ने यात्रा बस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

श्री सन्मति सुनीलम् महिला मण्डल, धावास की प्रचार मंत्री रीता जैन ने बताया कि धावास समाज के संरक्षक जय कुमार जैन-बड़जात्या और अध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार बैद के नेतृत्व एवं श्री सन्मति सुनीलम् महिला मण्डल की मंत्री सीमा बड़जात्या के संयोजकत्व में रवाना हुए दल में हैमेन्द्र लुहाड़िया, अभिषेक गर्ग, पारस जैन, अशोक बगड़ा, मुकेश जैन, चेतन जैन, शेखर चन्द पाटनी, भंवर लाल जैन, सरिता लुहाड़िया, मंजू बड़जात्या, सुधा जैन, अल्पना जैन, नीतू जैन, अवनी जैन आदि आचार्य सुनील सागर महाराज को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महा महोत्सव के लिए श्रीफल भेंट करने के साथ ही वर्ष 2027 का चातुर्मास राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगर-जयपुर में करने और धावास-जयपुर में 50वां अवतरण दिवस समारोह मनाने हेतु निवेदन करेंगे। श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन समाज समिति, धावास के परम संरक्षक गजेन्द्र - प्रवीण-विकास बड़जात्या ने अवगत कराया कि चार मंजिला भव्य शांतिनाथ जिनालय का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है और कुछ ही दिनों में मूलनायक श्रीजी को विराजमान करने का कार्यक्रम निर्धारित किया जाएगा। उसके बाद मंदिर जी का भव्य स्वरूप निखरकर सामने आयेगा।

चाकसू जयपुर हाईवे पर दिगंबर जैन आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज की प्रेरणा से

गोलोक गौशाला का हुआ भव्य शुभारंभ

महावीर कुमार सरावगी, संवाददाता- नैनवां

10 मई रविवार 2026। दिगंबर जैन आचार्य प्रज्ञा सागर जी महाराज की प्रेरणा से 15 फरवरी 2026 को नवीन गोलोक गौशाला का विधिविधान पूर्वक भूमि पूजन कर कार्य शुभारंभ हुआ। सुखोदय तीर्थक्षेत्र के अध्यक्ष श्री महावीर जैन पराडा निवाई ने जैन गजट संवाददाता को जानकारी देते हुये बताया कि चाकसू जयपुर के बीच हाईवे पर कहीं पर गौशाला नहीं होने से जैन संत ने दूध देने वाली गौमाता के लिए यह एक स्थान चयनित कर शुभारंभ कराया। हाईवे पर 21 बीघा भूमि में यह गोलोक गौशाला तीव्र गति से शुभारंभ हुआ। आज हाईवे पर गौशाला में 80 गाये विचरण कर रही है। यह गौशाला खुले में अभ्यारण की तरह खुले स्वस्थ वातावरण भूमि पर विचरण कर रही है। इस अवसर पर दिगंबर जैन आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज ने बताया कि गौमाता जब तक दूध देती है तब तक उसके मालिक उसे भरपूर चारा खिलाते हैं। गाय ने दूध देना बंद किया, उसके मालिक उसने लावारिस समझकर छोड़ देते हैं वह गौ माता घर-घर पर रोटी की तलाश में भटकती है। कई लोग दयालु उन्हें रोटी देते हैं और कहीं लोग रोटी ना देकर उन्हें दंडा देते हैं। संत ने इस बात को बिल्कुल ठीक नहीं बताया। जो गौमाता दूध देखकर बच्चों को ताकतवर बनाते हैं उसे गौमाता का गोबर छाने तैयार होने के

उपरांत भी उस गाय की हर वस्तु काम आती है। आज के मनुष्य ने उस गौमाता की ऐसी दशा कर दी इसका परिणाम उन्हें भुगतना होगा। हाईवे के पास रहने वाले गोपाल किसान ने बतलाया कि दिगंबर संतों ने बहुत बड़ा उपकार का कार्य कराया है। इसकी हम पूरे गांव के लोग प्रशंसा करते हैं। इसकी आज बहुत आवश्यकता थी लेकिन किसी का ध्यान इस और गया ही नहीं। दिगंबर संत ने इंदौर के बाहर बहुत ही बड़ा तीर्थक्षेत्र बना रखा है। चाकसू के पास भी अद्भुत क्षेत्र का छोटा गिरनार बापू गांव निर्माण कराया जहां जाने वाले भक्तों को सभी प्रकार की सुविधा भी उपलब्ध है।

सुमनदीप विद्यापीठ के इतिहास में स्वर्णिम क्षण

आचार्यश्री सुनील सागरजी के सानिध्य में पहली बार हुई भगवान महावीर स्वामी की दिगम्बर प्रतिमा स्थापित

शेखरचंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

वडोदरा (गुजरात), 15 मई 2026। सुमनदीप विद्यापीठ के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया, जब पहली बार देरासर परिसर में भगवान महावीर स्वामी की दिगम्बर प्रतिमा की विधिवत स्थापना सम्पन्न हुई। परम पूज्य 108 प्राकृताचार्य श्री सुनील सागर जी गुरुदेव के ससंघ (60 पिच्छि) के मंगलमय सानिध्य में दिनांक 15 मई 2026 को प्रातः 5 बजे लघु पंचकल्याणक महामहोत्सव अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल से ही देरासर परिसर में भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी। मंगल ध्वनि, मंत्रोच्चार और जयकारों के बीच सम्पूर्ण वातावरण धर्ममय हो उठा। विधि-विधान पूर्वक प्रतिष्ठा अनुष्ठान सम्पन्न हुआ, जिसमें श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव से सहभागिता निभाई। इस पावन अवसर पर जैन धर्म के 16वें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ का जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक भी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। भगवान का भव्य अभिषेक, शांतिधारा, पूजन-अर्चन एवं पंचकल्याणक विधान सम्पन्न हुआ। श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव से स्तुति, आराधना और मंगल गान प्रस्तुत कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। कार्यक्रम के दौरान देरासर परिसर में निर्वाण लाडू चढ़ाकर मोक्ष कल्याणक की मंगल भावना व्यक्त की गई। उपस्थित भक्तों ने इसे अपने जीवन का अविस्मरणीय आध्यात्मिक क्षण बताया। गुरुदेव ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि तीर्थंकरों का जीवन केवल पूजन का विषय नहीं, बल्कि त्याग, तप, संयम और आत्मकल्याण की प्रेरणा है। इस लघु पंचकल्याणक महोत्सव के आयोजक एवं सौधर्म इंद्र के रूप में डॉ. मनसुखभाई शाह परिवार को यह दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त हुआ। आयोजन की भव्यता, अनुशासन और आध्यात्मिक गरिमा ने उपस्थित समाजजनों को भावविभोर कर दिया। यह ऐतिहासिक अवसर सुमनदीप विद्यापीठ के धार्मिक इतिहास में सदैव स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा।

अजमेर में भव्य स्वर्ण सीढ़ी आरोहण कार्यक्रम

श्रीमती सुधा जी सोनी, श्रेष्ठी त्रिलोक चन्द जी सोनी की धर्मपत्नी अजमेर निवासी को 29 अप्रैल को उनके पोते वैभव व दोहते तुषार के जन्म दिन के अवसर पर मेरवाड़ा स्टेट में स्वर्ण सीढ़ी समारोह धूमधाम से मनाया गया। उनके परिवार के सभी सगे-सम्बन्धियों की मौजूदगी में यह कार्य बड़ी ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ। आपके सभी मेहमान दूर-दूर से आए तथा जामणा का कार्यक्रम भी रखा गया। भीलवाड़ा निवासी लोकेश जी प्रतीक जी लुहाड़िया अपने पूरे परिवार व रिश्तेदारों के साथ भीलवाड़ा से अजमेर बस द्वारा आए तथा पहले जामणा का कार्यक्रम उसके बाद स्वर्ण सीढ़ी आरोहण का कार्यक्रम राजेश जी सोनी के पुत्र वैभव-ऋषिका के पुत्री कविशका के होने के अवसर पर रखा गया, जिसमें संजय जी-राजेश जी ने कहा कि हमारे पुत्र-पुत्री बराबर है। इसी को ध्यान में रखकर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसमें अजमेर के सभी गणमान्य अतिथि कार्यक्रम की शोभा बढ़ा

रहे थे। शाश्वत, आलोकिक, अनीताजी, अलका जी ने सभी मेहमानों का स्वागत किया। इसमें त्रिलोकचन्द जी की तीनों पुत्रियों सुनन्दा, मीनल, श्रेया, आशीष जी, दिल्ली, श्रीमती वन्दना जी, गजेन्द्रजी, वत्सल-सलोनी, चहल जयपुर एवं पाण्डिचेरी से श्रीमान भरत जी, अर्चना, हर्षिता व तुषार सभी उपस्थित हुए एवं अजमेर से नमन सुरक्षि गंगवाल और बाम्बे से अक्षय-समृद्धि पाटनी उपस्थित हुये। अर्चना जी ने कहा कि मां असीम स्नेह, प्रेम, त्याग एवं ममता की मूरत मेरी मां सुधा जी सोनी के सम्मान में मनाया जाने वाला 'स्वर्ण सीढ़ी महोत्सव' में उनके पीहर पक्ष झांझरी परिवार नांवा वालों में शकुंतला जी विनोद जी, किरण जी, सुधीर जी-निर्मला जी व सुनील जी-सुनीता जी व बहनें व भाभियां सभी ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सुधा जी का स्वभाव सचमुच ही इतना सरल व सीधा है कि सभी उनको बहुत ही प्यार व सम्मान देते हैं। इस अवसर पर 1100/- की राशि जैन गजट परिवार को भेंट की गयी।

ममता, सम्मान और उत्साह के साथ मनाया मदर्स डे

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

11 मई, जयपुर। पापड़ीवाल महिला समूह की ओर से मातृत्व, प्रेम और त्याग को समर्पित मदर्स डे पर रविवार को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान एक ही परिवार की 3 पीढ़ियों ने बच्चों के साथ विभिन्न गतिविधियों का आनंद उठाया। बच्चों ने माताओं के साथ हाउजी, अंत्याक्षरी के साथ ही केक काटकर कार्यक्रम में उत्साह भर दिया। इस अवसर पर माताओं ने जहां बच्चों को मदर्स डे का महत्व बताया, वहीं बच्चों ने भी अपनी-अपनी माताओं को विभिन्न गिफ्ट देकर सम्मान किया। कार्यक्रम में स्नेहलता जैन ने बताया कि जिस प्रकार हमें हमारी मां ने हर परिस्थिति में ढलना सिखाया, आज वही संस्कार हम अपने बच्चों को दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया में मां का प्यार कभी कम नहीं होता। मां वह बैंक है जहां हम सुख-दुख जमा कर सकते हैं। मां के त्याग, समर्पण और स्नेह को शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है।

शत शत अभिनन्दन

मातृ भूमि के लिए सर्वस्व समर्पण करने वाले, मुगलों के विरुद्ध लड़ाई में महाराणा प्रताप के 25000 हजार सैनिकों के लिए 12 वर्ष तक के लिए राशन और सैनिक साजो सामान के लिए अपनी पूरी संपत्ति समर्पण करने वाले, भारतीय इतिहास के गौरवशाली अध्याय, जैन शिरोमणि दानवीर भामाशाह की जन्म जयंती पर शत शत अभिनंदन। ऐसा दानवीर भारतीय समाज में कोई नहीं हुआ।

-शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

विमल कुमार पाटनी को मिला मुनि का आशीर्वाद

शेखर चंद पाटनी/राष्ट्रीय संवाददाता

बड़के बालाजी, जयपुर (राज.)। आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज के ससंघ में मुनि 108 प्रभव सागर जी महाराज को नमोस्तु करते हुये निवासी दोध, जिला-सीकर प्रवासी कोलकाता परम मुनि भक्त, दानवीर, श्रेष्ठी, दृढ़ संस्कारवान, व्यवहार ज्ञान में निपुण विमल कुमार पाटनी को मुनि प्रबल सागर जी महाराज आत्मीय आशीर्वाद देते हुये।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

WITH BEST COMPLIMENTS FROM
Padam Chand Jain (Dhakra)
(Vice President-Shri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha)
Mahendra Kumar Jain (Dhakra)
(Working President- Shri Bharatvarshiya Digamber Jain
(Teerth Sanrakshini) Mahasabha T. N. Branch
Pradeep Commercial Interprises
(Iron & Steel Merchants)
56, Sembudoss Street, 2nd Floor, P. B. No 8343, Chennai-600 001
Phone No. 25228522, 25220032 Off. 25206812, 25202601 Resi.
Mobile : P. C. Jain-9444918024 M.k.Jain-9444028522
ASSOCIATE :
Shanti Enterprises
Banglore 080-25266482, Mob. : 09448092260

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरुजी चरण स्पर्श, मेरी भतीजी काफी समय से बी. टेक करने की कोशिश कर रही है मगर उसका एडमिशन ही नहीं हो रहा है - टोनी, औरंगाबाद

उत्तर - टोनी जी, आपकी भतीजी का एडमिशन जल्द हो जायेगा आप उसे श्री विमलनाथ जी का चालीसा पढ़ने के लिये कहें तथा मून स्टोन का लॉकेट सोमवार को धारण करायें।

प्रश्न 2. व्यापार में मन नहीं लगता, मुझे क्या करना चाहिये - मदन लाल, भुवनेश्वर, उड़ीसा

उत्तर - आप रोजाना व्यापार के स्थान पर श्री भक्ताभर स्तोत्र का 28वां काव्य पढ़ें तथा पन्ना रत्न का लाकेट बुधवार को धारण करें, अवश्य लाभ होगा।

प्रश्न 3. मेरा मन हमेशा नये-नये स्थानों पर जाने को करता है जिस कारण मेरा व्यापार भी प्रभावित हो रहा है मुझे क्या करना चाहिये - बंशीलाल, हैदराबाद

उत्तर - बंशी लाल जी, आपकी कुंडली में चल रही केतु की दशा के कारण ऐसा हो रहा है। आप लहसुनिया रत्न शनिवार को धारण करें तथा पार्श्वनाथ चालीसा पढ़ें।

प्रश्न 4. गुरुजी, धन प्राप्त हो इसके लिये मुझे क्या करना चाहिये, मैं कर्म तो बहुत करता हूँ मगर धन का हमेशा अभाव रहता है - भीमसेन, मुरादाबाद (उ. प्र.)

उत्तर - आप श्री पद्मप्रभु जी की माला चालीसा पढ़ें तथा माणिक्य रत्न रविवार को धारण करें, चूंकि आपकी कुंडली में धन भाव का स्वामी सूर्य ग्रह है इसलिये उपरोक्त उपाय आपके लिये आवश्यक है।

गुरुजी से संपर्क सूत्र-
9990402062
8826755078

जयपुर शहर में मंदिरों के अध्यक्ष, मंत्री तथा शिविर संयोजकों को आवश्यक मार्गदर्शन के साथ उपलब्ध कराई गई शिक्षण सामग्री

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

10 मई। परम पूज्य मुनिपुंगव सुधा सागर जी महाराज की पावन प्रेरणा व मंगलमय आशीर्वाद से श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर तथा अखिल भारतीय श्रमण संस्कृति महिला महासमिति भारत के तत्वावधान में पूरे देश में 17 मई से 28 मई 2026 तक आयोजित किए जाने वाले ''श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर'' के लिए रविवार को संस्थान में मंदिरों के अध्यक्ष, मंत्री एवं संयोजकों को मार्गदर्शन हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन तथा मंगलाचरण के साथ हुआ। बालिका छात्रावास की अधिष्ठात्री व्रती श्राविका शीला जैन ड्योडा ने अपने उद्बोधन में बताया कि सभी शिक्षक, विद्वान व विदुषियाँ अपने शुद्ध आचरण, उचित व्यवहार व अनुशासन के साथ अध्यापन कराते हुए धर्म प्रभावना करेंगे तथा समझाया कि संस्कार शिक्षण शिविर भव्य उद्घाटन समारोह के साथ शुभारंभ किए जाये व शिविर की कक्षाएं एक ही मंगलाचरण से शुरू हों तथा एक ही जिनवाणी स्तुति के साथ समाप्त की जाये।

कार्यक्रम के प्रचार प्रसार प्रभारी पदम जैन बिलाला ने बताया कि सभा को संस्थान के अध्यक्ष एस. के. जैन, वरिष्ठ आई पी एस, कार्याध्यक्ष प्रमोद जैन पहाड़िया, संयुक्त निदेशक प्रो. अरुण जैन, संयुक्त मंत्री दर्शन जैन, शिविर प्रभारी विनीता जैन आदि ने सम्बोधित कर मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में राजेन्द्र सेठी मीरा मार्ग, नम्रता जैन मुल्तान, पदम जैन जनकपुरी आदि द्वारा अपने सुझाव सभा के समक्ष रखे। उन्होंने बताया कि जयपुर में 63 मंदिरों में प्रत्यक्ष परोक्ष रूप से दस हजार से भी अधिक श्रावक जैन धर्म के ग्रंथों का अध्ययन कर धर्म का गहन ज्ञान तीन सौ से अधिक विदुषियों व शिक्षिकाओं के माध्यम से प्राप्त करेंगे, सभा के मध्य समाज में एकता के भाव हेतु राष्ट्रीय जिनशासन एकता का ध्वज मंचासीन श्रेष्ठियों द्वारा लहराया गया तथा मेरी भावना के प्रथम पद का वाचन कर ''जैनं जयतु शासनम् वंदे भरत भारतम'' का उद्घोष किया गया। सभी मंदिरों के संयोजकों को जयपुर शिविर प्रभारी विनीता जैन, चंदा सेठी व अंजना जैन द्वारा सहयोगियों के साथ आवश्यक पुस्तकें, बेग, पेन, कापी आदि शिक्षण सामग्री रविवार को सभा उपरांत वितरित की गई। यह शिक्षण सामग्री उद्घाटन समारोह के दिन ही सभी विद्यार्थियों का रजिस्ट्रेशन कर विषय अनुसार किट के रूप में उपलब्ध करा दी जाएगी।

कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु जयपुर के संघी जी मंदिर, दुर्गापुरा, जनकपुरी, चित्रकूट, थड़ी मार्केट, विवेक विहार, मोहन बाड़ी, मीरा मार्ग, वरुण पथ, राधानीकुंज, प्रताप नगर, निर्माण नगर, मधुबन, सेठी कालोनी, श्याम नगर, तिलक नगर, मालवीय नगर, जवाहर नगर, झोटवाड़ा सहित 63 मंदिरों में वहाँ के अध्यक्ष मन्त्री व संयोजकों में भारी उत्साह देखा गया। सभी शिविर की जबरदस्त तैयारी कर रहे हैं। सभा के समापन पर संस्थान के बारे संक्षिप्त जानकारी देते हुए संस्थान के प्राचार्य सतीश जैन शास्त्री ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सूर्यपहाड़ विकास समिति की मींटिग सम्पन्न

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा सूर्य पहाड़ विकास समिति की एक मींटिग 26 अप्रैल 2026 को प्रातः 9.30 बजे धोनो धान्यो ऑडिटोरियम, अलीपुर पुलिस लाइन, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) में आयोजित की गयी। मींटिग में श्री हुलाशचंद जी सेठी, परम शिरोमणि संरक्षक तीर्थ संरक्षिणी महासभा, श्री अशोक कुमार चूड़ीवाल उपाध्यक्ष तीर्थ संरक्षिणी महासभा एवं श्री विजय कुमार सबलावत उपस्थित हुये। सर्वसम्मत से यह निर्णय लिया गया कि सूर्य पहाड़ 1500 वर्ष प्राचीन अतिशय क्षेत्र हैं यहां पर पूर्वोत्तर भारत में जैन धर्मावलम्बियों का अस्तित्व 1500 साल पहले था। इसकी खोज अंग्रेजो द्वारा सन् 1870 में की गई थी आज से करीब 48 वर्ष पूर्व सन् 1975 में भगवान महावीर के 2500वें निर्वाणोत्सव वर्ष में सूर्य पहाड़ में जैन तीर्थंकरों की मूर्तियों का आविष्कार एक बहुत ही सुखद एवं गौरवमयी घटना थी। उस समय परम पूज्य आर्यिका गणिनी इन्दुमती माताजी का संघ असम प्रदेश के विजयनगर में भ्रमण कर रहा था। 2004 में प्रसन्न सागर जी महाराज सन्मान सागर जी महाराज ने भी सूर्य पहाड़ तीर्थ को अपना आशीर्वाद प्रदान किया था। महासभा तीर्थक्षेत्र पर सभी आमनाओं का सम्मान सम दृष्टि से करती आ रही है। शुरू से ही यह क्षेत्र श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अंतर्गत रहा है और 1995 में महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी के अथक प्रयास से असम सरकार द्वारा 52 बीघा जमीन प्राप्त की गई थी। यहां पर आचार्य दयासागर सागर जी महाराज ने भगवान आदिनाथ, बाहुबली भरत भी विराजमान किये। इस क्षेत्र में हर वर्ष आदिनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक का कार्यक्रम किया जाता रहा है और यहां जहां भी नये क्षेत्र बनाते हैं वहां पंथवाद नहीं होना चाहिये। इस क्षेत्र में सभी दिगम्बर जैन धर्म की सभी आम्नाय के लोग पूजन प्रक्षाल करें। यहां पर पंथ विशेष का कार्य न हो सभी पंथ को पूजा करने का अधिकार होना चाहिये। यह प्रस्ताव सर्वसम्मत से पारित किया गया। **प्रेषक- राजकुमार सेठी**

आचार्य श्री समयसागर जी महाराज के प्रवचनों से मार्मिक उद्बोधन

1. आगम के अनुरूप शास्त्रों का वाचन करो 2. गुरु के पास जाकर जिज्ञासा रखिए जिज्ञासा का समाधान व्हाट्सप पर हो रहा है, इससे समाज का अकल्याण होगा 3. जीते जी धर्म को समाप्त नहीं किया जा सकता 4. गुरुदेव ने आचार्य ज्ञान सागर महाराज के वचन सुनाए थे प्रभावना न करो तो कोई बाधा नहीं, तुम्हारे निम्मित से अप्रभावना नहीं होनी चाहिए 5. हमें विवाद नहीं करना, सच्चे गुरु शास्त्र को सुरक्षित रखिए 6. गुरु जी उपदेश आज्ञा देकर गए हैं उसका अक्षरशः पालन करना है 7. अहिंसा विश्व धर्म को सुरक्षित आगम के अनुसार करना है।

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एसोसिएट्स प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबाइल - 08290950000
प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
मोबाइल- 9840213132
राजेश बी. शाह
मोबाइल- 9076700000

महामंत्री
पवन जैन गोधा
मो. 9311198985

कोषाध्यक्ष
प्रकाश बोहरा
दिल्ली

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर प्रतिवर्ष अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल jaingazette2@gmail.com पर भेजें

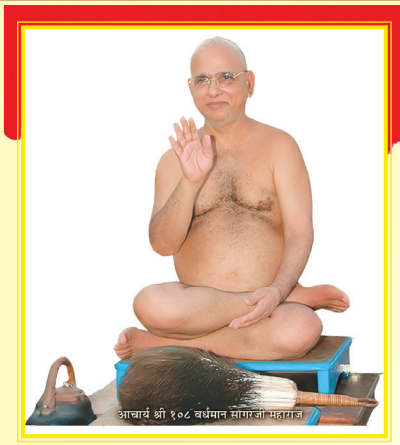

प्रथम पुण्यतिथि

श्रीमती कवलावति जी बोहरा

(देहावसान 27.04.2025)
धर्म पत्नी स्व. श्री कंवरीलाल जी बोहरा
आनंदपुर कालू (राज.)

आपका न होना आंगन में वटवृक्ष के न होने जैसा है,
जीवन पर्यन्त कर्म में लीन रहकर आपने हमारे लिए भी
कर्म और संस्कारों की मजबूत आधारशिला रखी है।
आपका पावन स्मरण हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ है।।

करोड़ों की आबादी वाले इस संसार में यदा-कदा ऐसी कर्म-धन्य महिला रत्न जन्म लेती हैं
जिनकी प्रेरणा और प्रतिबद्धता सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय होती है।
जिनका संकल्पित साहस अदम्य होता है, जो अपनी कर्मठता से औरों को भी ऊर्जायित प्रेरित करती हैं।
जो मशाल बनकर औरों का पथ आलोकित करती हैं तथा शाश्वत प्रेरणापुंज बनी रहती हैं।
आपकी यही प्रेरक पथ प्रदर्शक अमिट छवि हमारे स्मृति पटल पर सदैव जीवंत रहेंगी।

-: श्रद्धावनत :-

पुत्र-पुत्रवधुः तेजराज-राजकुमारी, महावीर प्रसाद-मधु बोहरा, पौत्र-पौत्रवधुः कमल-नीलम, विकास-पिंकी, संजय-खुशबू, कुमुद-विनीता, रजत-महिमा, पुत्री-पुत्री दामादः नयना-अशोक कुमार जी गंगवाल-पाण्डिचेरी, इन्दिरा-नरेश कुमार अजमेरा-नावां, पौत्री-पौत्री दामादः वंदना-विदित जी कासलीवाल- पाण्डिचेरी, अर्चना-पुष्पेन्द्र जी बाकलीवाल-मौजमाबाद, दर्शना-आशीष जी गदिया-अजमेर, प्रपौत्रः आयुष्मान, पार्श्व, वैभव, नमन, वीरम, गुणज्ञ, रक्षित, जिविका

-: प्रतिष्ठान :-

- एम. के. इण्डस्ट्रीज, आनन्दपुर कालू, जोधपुर
- वर्धमान एक्सपोर्टस, इचलकरंजी

निवास - बोहरा निवास, बस्सी रोड, आनंदपुर कालू
महावीर 10/732, वर्धमान चौक, इचलकरंजी, जिला - कोल्हापुर

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92
Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on Every Monday, wednesday and thursday
डाक पंजीयन संख्या : SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh, Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233, 7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
.....
.....
.....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-, दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।